दामन

ग़ज़ल

डॉ. वाहिद फ़राज़

दामन

मजमूआ-ए-ग़ज़ल

इशाअत-2003

शाईर
डॉ. वाहिद फ़राज़
30, मौलाना आज़ाद रोड़ झाबुआ (म.प्र.) 457 661
फोन नं. (07392) 244764

नाशिर
ऑल इण्डिया बज़्मे-सईद
30, मौलाना आज़ाद रोड़, झाबुआ (म.प्र.)
E-mail drwahidfaraz@Indiatimes.com
फोन नं. (07392) 244764

कर मुझ पे करम और ईनायत मेरे अल्लाह ॥
दादा को मेरे बख़्श दे जन्नत मेरे अल्लाह ॥

ख़िदमते बा बरकत मरहूमो मग़फ़ूर

दादा जान

मोहतरम, ग़फ़ीरुद्दीन शेख़ साहब

डॉ. वाहिद फ़राज़
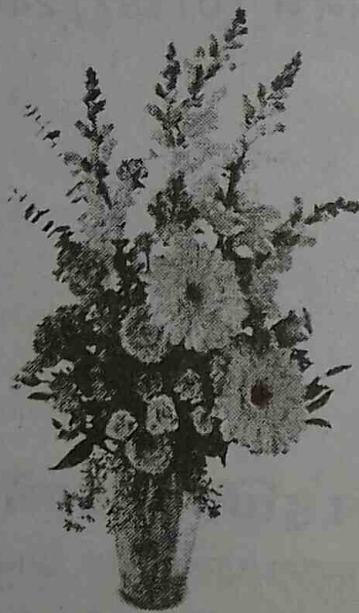
गुलहा-ए-अक़ीदत
उस्तादे अदब
मोहतरम, असर इन्दौरी साहब

गुलहा-ए-मुहब्बत
वालिदैन
मोहतरम, सईदुद्दीन शेख़ साहब
मोहतरमा, सरफ़राज़ शेख़ साहिबा

या ख़ुदा उस्ताद और माँ-बाप का ।
मेरे सर पर रखना साया देर तक ॥

नाशिर
ऑल इण्डिया बज़्मे-सईद
30, मौलाना आज़ाद रोड़, झाबुआ (म.प्र.)
E-mail drwahidfaraz@Indiatimes.com
फोन नं. (07392) 244764

इशाअत-2003

कीमत: 200/-

टाइप सेटिंग
ग्राफिक्स जे.नेट कम्प्यूटर
झाबुआ (म.प्र.)

आवरण
अलीम शेख़

मुद्रक
अलीम्स प्रिंटवेल
40, मौलाना आजाद मार्ग
झाबुआ (म.प्र.)
07392-244667

भूमिका

डॉ. वाहिद फ़राज़ की ग़ज़लों के इस संग्रह की भूमिका लिखते हुए मुझे झाबुआ में बीते हुए अपने दिन याद चले आए हैं । आदमी की याद बादल का एक टुकड़ा है , जितना बरसता है उतना पिघलता जाता है । डॉ. फराज़ ने अपनी ग़ज़लों का संग्रह भेज कर उन यादों को फिर कुरेद दिया है । नगर झाबुआ एक छोटी सी बस्ती ज़रूर थी लेकिन वहाँ साहित्यिक अभिरूचि सम्पन्न एक अच्छा खासा समूह था । देश के सबसे ज़्यादा जनजाती. जिले में अभिव्यक्ति का एक तराशा हुआ नागरपन डॉ.फराज़ के पास था । ऐसा कह कर मैं किसी भाषाई द्वेत की और संकेत नहीं कर रहा हूँ । मुझे तो हिन्दी और भीली-भीलाली की जड़े एक ही माटी में धँसी लगती है । मैं उस दिन को याद करता हूँ जब नर्मदा विकास प्राधिकरण से जुड़े लोग विस्थापितों की पीड़ा जानने के लिए आए हुए थे । मैं भी उनके साथ गया था । झाबुआ में नया नया ज्वाईन करने के कारण उस गाँव में ज्यादा लोग मुझे जानते भी न थे । मैंने देखा कि मेघा पाटकर के साथ खड़ी एक वाचाल सी महिला थी जो भील विस्थापितों की बातों का हिन्दी में अनुवाद कर रही थी । अनुवाद से उसके काफी मतलब सध रहे थे। एक तो वे भोले आदिवासियों की बातों में अपनी और से नमक मिर्ची मिलाने का अवकाश ले रही थी। अनुवाद के नाम पर सिर्फ "आर्टिकुलेशन "और "एडव्होकेसी" नहीं थी - बात में आन्दोलन के लक्ष्यों के अनुसार तपिश और शान पैदा करने की संक्रियाएँ थी । दूसरे अनुवाद के नाम पर यह सिद्ध किया जा रहा था कि आदिवासी स्वर की अधिकृत प्रवक्ता वही मोहतरमा है । तीसरे यह कि ये बाहर के लोग, ये अफसरान तुम्हारा कहा नहीं समझते । इनकी भाषा तुम्हारी भाषा से परायी है । ऐसे देखा जाए तो वे भील जो बोल रहे थे वो मुझ जैसे नवागन्तुक तक की समझ आ रहा था लेकिन वे मोहतरमा अनुवाद के नाम पर दिल्ली से आए उस दल और इस भील के बीच में दीवार और दरार रचने के मनोवैज्ञानिक खेल में पूरे मनोयोग से

जुटी हुई थी । बैठक समाप्त होने पर जब किसी ने मेघा पाटकर से मेरा परिचय कराया तो मैंने उनसे छूटते ही कहा कि मेडम, आप हिन्दी को द्वैत की भाषा के रूप में कैसे प्रयुक्त कर सकती है। हिन्दी तो जोड़ने वाली भाषा है । भीली तो उसी का एक स्थानीय चेहरा है । हिन्दी के कारण ही वह भीली भी सब की समझ में आ रही थी ,लेकिन अनुवाद के नाम पर हिन्दी पार्थक्य की पहचान के रूप में परोसी जा रही थी ।

डॉ. फ़राज़ की ग़ज़लें इस द्वेत का प्रतिनिधित्व करने वाली ग़ज़लें नहीं है । उनमें भारतीय संस्कारों की ख़ुश्बू रची बसी है :-

तू जो कहे तो मान लूँ ये भी।
छू ले आकर गंगा-जल ॥

अज़्मो-हिम्मत को बढ़ा कर के हिमाला कर दे।
क़ल्बे आसी को मुहब्बत का शिवाला कर दे ॥

यही है हिन्दी। जोड़ने वाली भाषा। इस भाषा में ग़ज़लें कहना आसान नहीं है , आम आदमी को रोज़ाना पेश आने वाली परेशानियों के बीच बड़ी हुई यह भाषा कलाकार के सामने हक़ीकतों को अभिव्यक्ति की चुनौती की तरह पेश करती है :-

बेटी जवान है मेरी दहलीज़ पर खड़ी,
जरजर हुआ लिबास मैं कैसे ग़ज़ल लिखूँ

ऐसे ही शायद निराला ने सरोज-स्मृति लिखी होगी । इसी के कारण लगता है कि वे एक पारिवारिक आदमी की ग़ज़लें है जो बेटी बच्चों के प्रति ज़िम्मेदार हैं । ये उस आम फ़हम इश्क़, हुस्न,शम्अ-परवाना साक़ी - मयख़ाना परम्परा की ग़ज़लें नहीं हैं जिनका रूमान एक नशे की तरह तारी होता है। यह तो उस आदमी की ग़ज़ल है जिसे साँझ होने पर घर चलने की याद आती है क्योंकि बच्चे देर से राह तक रहे होंगे :-

बच्चे तेरी राह तकें गे,
साँझ हुई है घर को चल।

ये बच्चे इस शायर की दुनिया में लगातार मौजूद है ।

मेरा ईमान डगमगाता है ।
जब भी बच्चे उदास होते है ॥
या
मिट्टी के एक कच्चे खिलोने के वास्ते ।
बच्चे हुए उदास में कैसे ग़ज़ल लिखूँ ॥

यह ईमान बला की ख़ूबसूरती से डगमगाने वाला नहीं हैं, यह बच्चों की उदासी से विचलित होता है। उसका द्वन्द्व भी एक औसत गृहस्थ का द्वन्द्व है-

बारिश का ख़ौफ़ सर पे शकिस्ता पड़ा है घर ।
दीवार गर बनाऊँ तो छप्पर का क्या करूँ ॥

यह ग़ज़ल में घर की वापसी है। इसमें चिन्ता है गृहस्थ की । इसमें ग़ालिब का फ़कीराना व्यंग्य नहीं है कि जो बेलोस कह सके

दरो दीवार पर उग रहा है सब्ज़ा ग़ालिब ।
मैं वीराने में हूँ और घर पर बहार आई है ॥

यहाँ तो घर शकिस्ता होने पर भी घर है अपने सारे फ़ंक्शंस के साथ :-

आटा नहीं है घर में तो मिर्ची भी है ख़तम ।
राशन मैं ले के जाऊँ कि कर्ज़ा अदा करूँ ॥

यही संवेदनात्मक स्वर महाजनों के ऋण जाल में फँसे झाबुआ के आदिवासी को एकीकृत करता है । इसीलिए मुझे उन लोगों की सोच पर तरस आता था जो हिन्दी को द्वैत और दूसरेपन की भाषा के रूप में जता रहे थे । अंग्रेजी का एक उपनिवेश हो सकता है लेकिन भारतेन्दु की भाषा और भारत की भाषा एक है । उसमें कोई दावा नहीं है , विनम्रता है । विनम्रता इन्सान के प्रति भी और भगवान के प्रति भी :-

मॉंगता हूँ मैं जो उससे वो सिवा देता है।
मेरी औक़ात मेरे क़द से बड़ा देता है ॥

मेरी शुभकामना है कि डॉ. फ़राज़ की यह विनम्रता और कृतज्ञता बनी रहे । इस बीच मेरी व्यस्तताओं ने भूमिका लिखवाने के उनके धैर्य की काफी परीक्षा ली है । लेकिन यह उनका स्नेह ही है कि वे इतनी प्रतीक्षा के बावजूद अपनी ज़िद पूरी करवा के ही माने ।

मनोज श्रीवास्तव
भा.प्र.से.

सी.एम.डी. (म.प्र.वि.मं.पूर्व क्षेत्र)
शक्ति भवन रामपुरा
जबलपुर (म.प्र.)

आशीर्वचन

डॉ. वाहिद फ़राज़ की ग़ज़लों से मेरी पहली मुलाकात तब हुई जब झाबुआ में उन्होंने मुझे इस संकलन की पांडुलिपि दी थी। उस समय मैंने संकलन को बस यूँ ही उल्टा-पुल्टा, जैसा कि अमूमन किया जाता है। लेकिन जब निगाहें कुछ ग़ज़लों की कुछ पंक्तियों पर पड़ी तब मुझे अनायास ही लगा कि इन्हें पढ़ा जाना चाहिये, और मैंने पढ़ी।

इधर पिछले ख़ासकर दो दशकों से गज़लों के साथ दो अच्छी बातें हुई है। पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गज़लों ने शराब और साक़ी से स्वयं को निकाल कर एक व्यापक दृष्टिकोण को अपनाया है। अब उसमें जीवन और जगत की भी धड़कनें स्थान पाने लगी है।

दूसरी यह कि गज़लों ने अरबी, फारसी के कठिन शब्दों के स्थान पर उर्दू के बहुप्रचलित और यहाँ तक कि हिन्दी के भी शब्दों को बहुतायत से लेना शुरू कर दिया है। इससे गज़लें आम लोगों तक पहुँचने में सफल रही है।

डॉ. फ़राज़ की गज़लें इन दोनों ही प्रवृत्तियों का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। इनमें जहाँ मानवीय प्रेम और सौंदर्य के भाव हैं, तो वहीं, कहीं-कहीं अपनी व्यापकता में अखिल सत्ता का आभास देने लगती हैं। जीवन की आपाधापी, वर्तमान के प्रति खीझ और नैराश्य का भाव तथा यहाँ तक कि जीवन के छोटे-छोटे प्रसंगों को भी उन्होंने कलमबद्ध करने में सफलता पाई है।

भाव और भाषा दोनों ही स्तरों पर दामन की ग़ज़लें प्रभावित करती हैं। कोई-कोई पंक्ति तो बहुत ही अधिक सधी हुई तथा नई उद्भावनायें लिये हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि उनकी लेखनी इस तरह की ढेर सारी पंक्तियों के जन्म देगी।

ई-/5/77 अरेरा कॉलोनी
भोपाल (म.प्र.) पिन-462016
फोन नं. 2553656,2574975

डॉ. विजय अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
भारतीय सूचना सेवा एवं
पूर्व राष्ट्रपति/उप-राष्ट्रपति
डॉ. शंकरदयाल शर्मा के पूर्व निजी सचिव,

पेशे लफ़्ज़

आज कल ग़ज़लें बहुत लिखी जा रही हैं । बड़ी तादाद में छप भी रही हैं, मगर ग़ज़ल के लिये ज़रूरी बुनियादी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता । अच्छी ग़ज़ल या अच्छी ग़ज़लों का मज्मूआ पढ़ने में आए तो यूँ लगता है जैसे धूप में ठंडक का मिले एहसास, जैसे बेढब शोर में सुनाई दे जाए जल तरंग की मीठी धुन जैसे बेतरतीब पड़े-पौधों के जंगल में मिले सलिक़े से सजा संवरा गुलशन।

शगुफ़्ता ग़ज़लों का एक हसीन गुलशन है, डॉ. वाहिद फ़राज़ का दामन। इस किताब दामन में सजी ग़ज़लों में शाइरी का हुस्न है, सोच की ख़ूबसूरती है,अल्फ़ाज़ के रख-रखाव में फ़नकारी है। डॉ. वाहिद फ़राज़ के दामन में वह सब है जो ग़ज़ल में होना चाहिए।

अपने बुज़ुर्गों को याद रखना, दादा-दादी की दुआएं, माँ-बाप के लिए नेक ख़्वाहिशात और उस्तादे मोहतरम के साया-ए-मुशफ़िक की तमन्ना रखना बड़ी बात है, जिसे डॉ. वाहिद फ़राज़ भूले नहीं है, नेक औलाद और नेक शागिर्द की यही रोशन पहचान है।

डॉ. वाहिद फ़राज़ की यह पहली पेशकश है दामन। वाहिद फ़राज़ झाबुआ म.प्र. के नौजवान शाईर हैं, झाबुआ में एक बेमिसाल शख़्सियत हैं जनाब असर इन्दौरी जिन्होंने झाबुआ की संगलाख़ ज़मीन को गुलशने-अदब बनाया। यह एक तारीख़ साज़ काम हुआ है, जिसके लिए असर साहब कभी भुलाए नहीं जा सकेंगे। असर साहब की कविशे-जमील के सबब आज झाबुआ में कितने ही शाईर हैं, जिनमें से एक हैं, डॉ.वाहिद फ़राज़, जिनकी ग़ज़लों का पहला मजमूआ है दामन जिसके पढ़ने से यह बात साफ़ हो जाती है कि वाहिद फ़राज़ एक दर्दमन्द दिल रखते हैं, जो एक अच्छे शाईर के लिए निहायत ज़रूरी है।

वाहिद फ़राज़ की यह दामन भर ग़ज़लें हैं। उनकी ग़ज़लों में हुस्न है, इश्क़ है, समाज है, हालाते- हाज़रा का दर्द है और दर्द के लिए मरहम भी है। रात के दामन में कितने ही सितारे होते हैं, जिन्हें देखकर किसी ने खुशी के चराग़ों का जश्न माना, किसी ने आँसुओं की मिसाल दी, किसी ने यादों का हुजूम माना।

ग़रज़ ये किसी ने कुछ तो किसी ने कुछ सितारों को माना मगर वाहिद फ़राज़ ने माना सितारे जिन पर अँधेरे हावी नहीं हो पाते, सितारे अपनी चमक लिये नज़र आते ही हैं जो मेरा हौसला बढ़ाते हैं -

मुसीबतों में बढ़ाते हैं हौसला मेरा।
चमकते देखता हूँ जब कभी सितारों को ॥

नये लहजे और नये सोच के कितने ही शेर हैं वाहिद फ़राज़ के दामन में, साथ ही हुस्नो-इश्क़ के ग़म और खुशी के भी अश्आर हैं। ग़ज़ल जितनी आसान सिन्फ़ नज़र आती है उतनी मुश्किल भी है। ग़ज़ल अपनी रमज़ियतो-इशांरियत की ज़बान में सब कुछ कहने की सलाहियत रखती है। ग़ज़ल की इस सलाहियत से फ़ायदा उठाना हर शख़्स के बस की बात नहीं है। ऐसे जोहरे-क़ाबिल भी नई नस्ल में मौजूद हैं जो ग़ज़ल कहने में इम्तियाज़ हासिल कर रहे हैं। मैं यक़ीन से कह सकता हूँ कि डॉ. वाहिद फ़राज़ इस सफ़ में शामिल हैं मुझे ये भी यक़ीन है कि उनके मजमूआ-ए-ग़ज़ल दामन को ख़ूब पसन्द किया जायेगा।

क़मर "बरतर"
सम्पादक फ़नकार
साहित्यिक हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लक्कड़खाना ग्वालियर 474001 म.प्र.
फोन नं. 0751-2336151

अल्फ़ाज़े शफ़्क़त

झाबुआ का नाम गोश गुज़ार होते ही जंगलों और पहाड़ों का तसव्वुर ज़हन में उभरने लगता है। यह एक आदिवासी देहाती ज़िला है। मुजाहिदे वतन शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद के हवाले से इसे सारी दुनिया में जाना पहचाना जाता है। इस ज़िले की बदनसीबी यह रही कि यहाँ न तो कोई शाईर पैदा हुआ था न कोई मुसव्वीर ही यह ज़िला फ़नकाराना हेसियत हासिल करने में अर्स-ए-दराज़ से नाकाम था।

मगर हिन्दुस्तान तुलसी, कबीर, मीरो-ग़ालिब और टैगोर की सरज़मीन है यहां की फज़ाएं उकसाती हैं शेरगौई के लिए और मजबूर करती हैं, मोसीकार को साज़ उठाने पर, अब झाबुआ के हालात भी बदले हैं आज यहां शाईर पैदा होने लगे हैं। दिगर अदबी मराक़िज़ की तरह यहां के शाईरों के भी अदबी मजमूए मंज़रे आम पर आकर दादोतहसीन हासिल करने लगे हैं। यह इलाक़ा भी शेरों सुख़न के हवाले से लायक़े सद-इफ़तेख़ार समझा जाने लगा है, यहाँ भी शेरो सुख़न की शमअ रोशन होने लगी, और यहाँ भी शोरे अदब के नख़्ल परवान चढ़ने लगे यही नहीं उनके फूलों की ख़ुशबू देश विदेशों में फैलने लगी है।

डॉ. वाहिद फ़राज़ उन्हीं में से एक जवाँ फिक्र, जवाँ साल शाईर होते हुए हस्सास तबीयत और ख़ुशअखलाकी के मालिक है। ये पीछले बीस सालों से तबा आज़माई जारी रखे हुए लेलाए ग़ज़ल की ज़ुल्फों को संवारने में हमा-तन मसरूफ़ नज़र आते हैं। झाबुआ आपका आबाई वतन है, आपने अपनी कुल तालीम यहीं पूरी की और अब जिला पंचायत झाबुआ में सरकारी मुलाज़िम है। आपने अपनी शायरी का आग़ाज़ भी यहीं से किया आपके लिखने का अंदाज़ निराला है। आपका शुमार झाबुआ की नुमाइन्दगी करने वाले शौरा में किया जाता है।

डॉ. वाहिद फ़राज़ की शायरी वक्त और हालात की तरजुमानी करती है। नोए-इसां की बेबसी और लाचारी का क़र्ब आपके शेरों में नुमाया तौर पर नज़र आता है। आप समाज की तंग नज़री और नाइन्साफ़ी के ख़िलाफ़ यूँ कहते नज़र आते हैं।

पढ़के हालात का चहरा क्या कभी देखा है।
अपनी आँखों में हसीं ख़्वाब सजाने वाले ॥

ज़माने की मौजूदा रविश से मुतासीर होकर कहते हैं,

तू ही मुजरिम तू ही मुन्सिफ।
तुझ से अदावत कौन करे ॥

एक हस्सास शाईर के दिल में ज़माने का जो दर्द होना चाहिए वह आपके सीने में बक़दरे मौजूद है, आज के नाम निहाद और पेशावर शौरा की तरफ़ इशारा करते हुए आप फ़रमाते हैं,

शेरगोई से हुआ बख़्त किसी का रोशन।
कोई बैठा रहा तारीक मुक़द्दर से लेकर ॥

देखिए समाज की एक ख़तरनाक बीमारी की तरफ़ इशारा करते हुए क्या कहते हैं,

धन की लालच में बहू अपनी जलाने वालों।
बेटियां अपनी जलाओ तो बहुत अच्छा है ॥

ग़रज़ यह कि सच्ची और खरी शायरी करने का सलिक़ा डॉ. वाहिद फराज़ में बदरजए अतम मौजूद है। एक अच्छे शाईर की यही पहचान है। आप अच्छा लिखते हैं अगर आपने अपनी मश्क़ जारी रखी तो वह दिन दूर नहीं जब आपका शुमार हिन्दुस्तान के नामवर शौरा में होने लगे। इंसानी हमदर्दी, अख़लाको-मुहब्बत, बच्चों से शफ़ाक़त, अपने हम असर नवजवानों से मुहब्बत, बुज़ुर्गों से अक़ीदत उनकी क़दरों-मंज़िलत ये तमाम ख़ुबियाँ आप में बदरजए हुस्ने कमाल पेवस्त है।

आप अपना पहला शेरी मजमूआ दामन लेकर मंज़रे आम पर आ रहे हैं, मुझे उम्मीद है आपका यह मजमूआ हर ख़ासो आम में शरफ़े कबुलियत हासिल करेगा। आमीन........सुम्म आमीन,

दुआगो

असर इन्दौरी
जामा मस्जिद कॉलोनी
झाबुआ (म.प्र.) 457 661
फोन नं. 07392-245101

क़ीमती अल्फ़ाज़

अपने ढंग के अनोखे एवं सशक़्त ग़ज़लकार डॉ. वाहिद फराज़ मेरे अनुज भी हैं और साहित्य मित्र भी। ग़ज़लों की दुनिया में एक ख्याति प्राप्त युवा हस्ताक्षर का नाम ही वाहिद फ़राज़ है, मैं उनके सहज हृदय,व्यक्तित्व और व्यवहार से जितना प्रभावित हूँ, उतना ही उनकी ग़ज़लों से भी, उनकही ग़ज़लों में सहजता सरलता और अनुशासन के साथ गंभीर पैनापन है। उनके ख़ुबसूरत व्यक्तित्व की तरह उनकी ग़जलें भी मन मस्तिष्क को छू ती हैं।

ज़िन्दगी को उन्होंने बहुत क़रीब से देखा है, कम उम्र में ज़िंदगी की अच्छाई और बुराई से जिनका साक्षात्कार हो चुका है। ग़ज़लों के माध्यम से बात करने का उनका अपना मौलिक एवं प्रभावशील अंदाज़ है। यही वजह है कि ग़ज़ल रचनाकारों में वे अपने ढंग के अनोखे रचनाकार हैं, जो पाठकों और श्रोताओं के मन में जगह बनाए हुए हैं ,श्री फ़राज़ ने चुनिंदा ग़ज़लों का चयन कर अपने दामन में समेटा है, जो पठनीय व संग्रहणीय तो है ही वहीं ग़ज़लों की दुनिया में अपना अस्तित्व कायम रखने में पूर्ण सफल और सार्थक है।

मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने श्रेष्ठ ग़ज़लों से साहित्य की श्रवृद्धि की है जो सदैव स्मरण रखी जाएगी।

—————————— राम शंकर चंचल

डॉ. वाहिद फ़राज़ उर्दू अदब की उस नयी पीढ़ी के ग़ज़लकार हैं, जो ग़ज़ल की परम्परागत भाषा की दीवार को नहीं मानती। हिंदी भाषा में उनका वर्तमान ग़ज़ल संग्रह दामन इस बात का सबूत है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में आस्था रखते हुए वे भाषा का बंधन कहीं स्वीकार नहीं करते। इसलिए, उनकी ग़ज़लों में उर्दू-हिंदी और आंचलिक भाषाओं का संगम, इस खूबी के साथ अभिव्यक्ति का सौंदर्य पैदा करता है कि आम पाठक भी उनके दामन की ग़ज़लों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

डॉ. वाहिद फ़राज़ के दामन की ग़ज़लों में सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियाँ, जीवन का यथार्थ और उनकी ख़ुद्दारी अपनी पूरी शिद्दत के साथ मौज़ूद है। उनकी ग़ज़लों में एक संवेदनशील हृदय की

धड़कन साफ महसूस की जा सकती है। विसंगतियों के विरूद्ध उनकी ग़ज़लों के स्वर कहीं आक्रमक तो कहीं व्यंग्यपूर्ण हो जाते हैं।

दामन की ग़ज़लों का एक प्रमुख विषय रूहानी और रूमानी इश्क़ भी है। लेकिन ये ग़ज़लें प्रेमिका को ही सम्बोधित नहीं करती बल्कि इनमें वे ख़ुद भी अपने से और साथ-साथ अपने आस-पास के मंज़र से भी संवाद स्थापित करते हैं। इसलिए, डॉ. फ़राज़ की ग़ज़लें लिजलिजे शारीरिक रोमांस को अभिव्यक्त नहीं करती बल्कि इस अभिव्यक्ति में सामाजिक चेतना की फ़िक्र का भी शुमार है।

ग़ज़ल के प्रगतिवादी आलोचकों ने ग़ज़ल को एक सामंती सरमाया माना था जो वक़्ती ज़रूरतों की कसौटी पर ख़री नहीं उतरतीं। काश ! वे देख पाते कि आज की ग़ज़ल किस क़दर वक़्त की ज़रूरत को पूरा कर रही है। डॉ. वाहिद फ़राज़ का दामन भी ग़ज़लों के इसी नए हुज़ूम का हिस्सा है।

———————————————— डॉ. सतीश गौड़

लोग कहते हैं आईना जिसको ॥
ऐसी रोशन किताब रखता हूँ ॥

ठीक ऐसी ही रोशन किताब प्रस्तुत की है भाई डॉ. वाहिद फ़राज़ ने और वह रोशन किताब है दामन जिसमें भाई फराज़ की उम्दा से उम्दा सौ ग़ज़लें सुधी पाठकों के लिए प्रकाशित हुई हैं। इन प्रकाशित ग़ज़लों में जीवन के विविध पक्षों, अंतरंग अनुभूतियों को बड़े जिवन्त रूप से उद्‌घाटित किया है। निश्चित रूप से यह ग़ज़ल संग्रह भाई फ़राज़ के साहित्यिक क़द को और बढ़ाएगा, ऐसी मेरी मंगल कामना है।

———————————————— आजाद रामपुरी

माँ शारदा के वरद् पुत्र डॉ. फ़राज़ एक संवेदनशील साहित्यिक विभूति है। जिनके गीत-ग़ज़लें गुनगुनाने को जी चाहता है। क्योंकि वे उनके हृदय की गहराईयों से निकल कर शब्दों में ढलती हैं, इसलिए उनमें इतनी लयबद्धता, गीतात्मकता और रससिक्तता है। जीवन में सब कुछ है सुख-दुख, मान-अपमान, मित्र-शत्रु, आस्तिक-नास्तिक, किंतु उनका नज़रिया जीवन की कड़ुवाहट में मिश्री की मीठास घोलने का है। वे सौंदर्य-

श्रृंगार, प्रेम और परमात्मा के साधक हैं और इंसानियत के आराधक हैं। अज्ञान अंधकार में प्रकाश की किरण खोजने वाले डॉ. वाहिद फ़राज़ समय से पहले साहित्याकाश की बुलन्दियों को छू लेंगे क्योंकि-

जो भी करते हैं दीए इल्मों-वफ़ा के रौशन।
याद रखते हैं उन्हें लोग, मिसालों की तरह॥

ग़ज़लों की इस नायाब पुस्तक प्रकाशन पर अशेष शुभकामनाएं एवं मंगलकामनाएं।

—————————— **डॉ. के.के. त्रिवेदी**

दामन डॉ. वाहिद फ़राज की एक अनुपम कृति है, जिसमें विविधवर्णी आयामों का रूपांकन शब्दों के माध्यम से जीवन्त हुआ है। जिसके भावों की खुश्बू पाठकों को प्रारम्भ से अन्त तक बाँधती है और सबसे बड़ी बात यह है कि परम्परागत रूमानी ग़ज़लों को छोड़ डॉ.वाहिद ने व्यवहारिक विषयों को आधार बनाया जो स्वागतेय है। निश्चित ही दामन, ग़ज़लों की लम्बी यात्रा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

—————————— **फादर डॉ. महिपाल भूरिया**

झाबुआ अदब में नींव का पत्थर कहे जाने वाले भाई डॉ. वाहिद फ़राज़ का अख़लाकी दामन भी बड़ा ही वसी है। आपके दामन में मैंने जज़्ब का माअद्दा, संजीदगी, आजज़ी और इन्कसारी एक सरमाये की तरह देखी है। आपका अज़्म पुख़्ता और फ़ैसला अटल होता है। इस जिद्दी शाईर ने जो चाहा वही पाया। आम फ़मी यह है कि वाहिद फराज़ एक खुली किताब है, मगर मेरी नज़र में वाहिद फराज़ को समझना टेढ़ी खीर है। इस हवाले से मुझे उनका ही एक मतला याद आता है।

सभी ने देखा है मुझको, जिगर नहीं देखा।
किसी ने मेरे इरादों का घर नहीं देखा॥

भाई वाहिद फ़राज़ ने दामन के ज़रिए कई कड़वे सच उजागर करते हुए ज़माने को आईना दिखाया है। अल्लाह तआला दामन को शर्फ़े मक़बुलियत अता करे।

—————————— **इरफ़ान आलीराजपुरी**

दामन भावनाओं की ऐसी कालिन्दी है। जो गतिशीलता और विविधता से सृजन और परम्पराओं के नए पथ का निर्माण करती है। इसमें कहीं अंत: करण के रूदन की मर्म संवेदनाएं है, तो कहीं बाह्य स्थूल जगत का शंखनाद। कहीं सत्यं शिवं सुन्दरं की ग्राह्यशीलता का स्वर मुखरित है तो कहीं पीड़ा के दंश का स्पन्दन। डॉ. वाहिद फ़राज़ उन गम्भीर रचनाकारों में से हैं, जिन्होंने सदा यथार्थ का ठोस धरातल चुना । वे रूढ़ीवादिता को तोड़कर नई परम्पराओं के सृजन में विश्वास रखते हैं। यही कारण है कि एक लम्बी साहित्यिक यात्रा के पश्चात ही उनका परिष्कृत प्रथम ग़ज़ल संग्रह आपके हाथों में है।

———————— डॉ. जय वैरागी

दामन में प्रकाशित ग़ज़लें अपने आप में अदभूत आनंद की अनुभूति प्रकट करती है। जैसा कि भाई वाहिद फराज़ स्वयं कहते हैं,

सर पर चादर मत रख लेकिन ॥
आँखों में तो पानी रख ॥

उनकी ग़ज़लों में जहां एक ओर सामाजिक वेदना की पीड़ा छिपी है, वहीं दूसरी ओर श्रृंगार को भी नया आयाम देने का प्रयास किया गया है। अंत में–अपनी अदा से चलो ख़ुदा मिलेगा की तर्ज पर भाई फ़राज़ का यह प्रयास अनवरत गतिमान रहे। इसी कामना के साथ।

———————— सुधीर तिवारी

डॉ. वाहिद फ़राज़ का ग़ज़ल संग्रह दामन पढ़ा ऐसा लगा कि आधुनिक ग़ज़ल लेखन में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन की लहर मचल रही है। उनके ग़ज़ल संग्रह में ग़ज़ल संग्रह में ग़ज़लों का मर्म स्पर्श संवेदना उसकी मौलिकता/नूतनता एवं मर्यादाओं की परिधी, जीवंतता का अहसास करवाती है। और वही पाठकों की अंगुली पकड़ किताबों से निकल जनपथ की सैर करवाती है।

आपने ग़ज़ले के माध्यम से अतित से वर्तमान को जोड़ा है निःसंदेह यह स्वीकारना होगा कि हर जागृत /सुप्त/अर्ध्द –निद्रीत/ निद्रीत/अनछुई भावनाओं तक को डॉ. फ़राज़ ने स्पर्श कर अभिव्यक्त किया। आपका प्रयास स्तुत्य है।

———————— डॉ. कैलाश समीर

वाहिद फ़राज़ का लबो लहजा सुधी पाठकों के गले उतरता है, इनकी सरल बयानी ही इनकी शायरी की पहचान है। जो इन्हें हर ख़ासो आम में मक़बूल बनाती है।

डॉ. महेश कुमार सड़ैया

ग़ज़ल की सादगी बहुत अर्सए दराज़ के बाद डॉ. वाहिद फराज़ के ग़ज़ल संग्रह दामन के माध्यम से देखने में आई है।

जानकीलाल केलवा

ग़ज़ल संग्रह दामन में मेरी पसंदीदा ग़ज़लों का समावेश किया गया है। ईश्वर से कामना करता हूँ कि दामन पाठकों में लोकप्रिय हो।

एडवर्ड गणावा

साहित्य की कठिन विधा ग़ज़ल और ग़ज़ल के माध्यम से भाई वाहिद फ़राज़ की सुंद अभिव्यक्ति का नाम दामन है।

ओमप्रकाश शर्मा

लीक–लीक सब चले कायर और कपूत।
लीक छोड़ तीनों चले शायर, सिंह, सपूत।।

उक्त पंक्तियां भाई वाहिद फराज़ की शायरी के संदर्भ में याद आती है।

विवेक पेंटर

डॉ. वाहिद फराज़ के दामन में जहां फ़तह और नुसरत की झलक पाई जाती है वहीं दुआईया अश्आर के साथ-साथ आजज़ी भरे अश्आर की भी कमी नहीं है।

नफ़ीसा भारती

कठिन परिश्रम, मुश्किल हालात और नसीब की ठोकरों से रूबरू हो कर ज़माने को सीख देने का ज़िम्मा दामन के ज़रिए भाई डॉ. वाहिद फ़राज़ के हिस्से में आया है।

घर से मिली शिक्षा व संस्कार तथा गुरू से मिली दीक्षा एवं

शिष्टाचार ने संग्रह के माध्यम से भाई फ़राज़ को आम भीड़ से अलग खड़ा कर दिया है। संग्रह में सादगी तथा संजीदगी पूर्ण लेखन कला एवं सरल सहज भाषा शैली दामन का मुख्याकर्षण है।

__________ **मनोज जैन**

डॉ. वाहिद फ़राज़ के ग़ज़ल संग्रह दामन पर पहली नज़र पढ़ने से साहित्य मन को आत्मानुभूति होती है। भाई फराज़ के उर्दू भाषा में सरस प्रवाह वे प्रभाव पूर्ण ग़ज़ल विधा ने हिंदी केसुधी पाठकों को उर्दू हिंदी की गंगाजमनी शैली और भाई चारे की मिठास दी, वहीं हिंदी ग़ज़लकार त्रिलोचन, दुश्यन्त कुमार, ज़हीर कुरैशी, नीरज तथा कुंअर बैचेन की याद दिलाई।

आपके दामन में माँ की ममता, पिता का अनुराग तो गुरू के प्रतिगुरूभक्ति का त्रिवेणी संगम अदभूत पाया जाता है।

__________ **निसार रम्भापुरी**

भाई वाहिद फ़राज़ की ग़ज़लें स्वयं बोलती है–बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

__________ **कैलाश बुन्देला**

दामन की कुछ ग़ज़लें पढ़ने का इत्तेफ़ाक़ हुआ कुछ ग़ज़लें तो वाक़ई शाईर के क़दो–कामद से ऊँची लगती है।

__________ **सुनील सक्सेना**

डॉ. फ़राज़ एक रोशन ख़याल शाईर हैं, इस बात का पता इनकी नायाब ग़ज़लगोई से लगता है। दामन के लिए ग़ज़लों का किया गया इन्तख़ाब भी मयारी है।

__________ **साबिर जबलपुरी**

दामन की ग़ज़लें अपने विक़ार और मयार की बलन्दियों पर जगमगाती दिखती हैं। भाई फ़राज़ की ग़ज़लें अदब का सरमाया है।

__________ **जमील अंसारी**

जनाब डॉ. वाहिद फ़राज़ एक ख़ुशफ़िक्र शाईर है। मसलन, उन्हीं का शेर है।

कर के मजदूरी माँ नहीं आई।
कितनी जल्दी उतर गया सूरज ॥

______________ एजाज़ नाज़ी धारवी

भाई वाहिद फ़राज़ का ग़ज़ल संकलन पढ़ने में आया, रचनाएं रोमांचक एवं मन को प्रफुल्लित करने वाली लगीं। भाई फराज़ अपने क्षेत्र में बुलंदी पर पहुँचे ऐसी मेरी परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है।

______________ महेन्द्र धनधौरिया

डॉ. फ़राज़ की ग़ज़लों में जहां इन्क़लाब की गूंज है वहीं ग़ज़ल का तग़ज़्ज़ुल भी नुमाया तौर पर पाया जाता है।

______________ ज़फ़र इक़बाल इन्दौरी

दामन मजमूआए ग़ज़ल वाज़े तौर पर हालात की अक्क़ासी करता है। यक़ीनन यह हिंदी-उर्दू ग़ज़ल की विरासत है।

______________ हशमतुल्लाह ख़ान शाहिद

ग़ज़ल वाहिद फ़राज़ के दामन में ऐसी बोलती है, जैसे एक कम उम्र का बचा किसी बुज़ुर्ग की जुबान में बात करता हो।

______________ अ.शकुर रहमान बाबा

दामन की ग़ज़लें पढ़कर लगता है मानो वाहिद फ़राज़ लायके एहतराम शाईर है।

______________ अलीमुद्दीन आसिफ़

दामन की ग़ज़लें बाताती हैं जो भी इनका ख़ालिक है इल्मों फन का मालिक है।

______________ जमील शकील रतलामी

भाई फ़राज़ मेरी पसंद के अच्छे शाईर और अच्छे इंसान है।

गंगा भिडे

डॉ. वाहिद फ़राज़ को मैं ग़ज़लों के हवाले से जानता हूँ, उनकी ग़ज़लें बताती है कि वाहिद फ़राज़ मुस्तकबिल के नामवर शाईर हैं।

होश नोमानी रामपुरी

भाई फ़राज़ की ग़ज़लों में हुस्नो–इश्क़, अख़ूवतो–मुहब्बत अदबो–एहतराम के साथ-साथ वालेहाना अंदाज़ और हालात पर तफ़सिरा पाया जाता है।

सुनीता ख़ुश्बू

फ़राज़ की ग़ज़लें पढ़कर लगता है जैसे इन्होंने पाठक की नब्ज़ को पकड़ लिया है।

नंदलाल वैरागी

दामन ग़ज़ल संग्रह में शरबो–शबाब का रसास्वादन ही नहीं बल्कि सामाजिक बुराईयों पर करारे व्यंग्य भी है। संकलन पाठकों को भावनात्मक रूप से जोड़ने एवं साम्प्रदायिक सौहार्द्र को बनाए रखने में सार्थक होगा, ऐसी मेरी कामना है।

दिनेश पण्ड्या सहज

वाहिद फ़राज़ इतने अच्छे और सच्चे शाईर हैं, कि पाठकों को शेरों में अपना चरित्र दिखाई देता है। डॉ. वाहिद फ़राज़ की ग़ज़लों में ज़िंदगी के साक्षात दर्शन होते हैं।

वीरेंद्र मोदी दर्द

समाजवाद और राष्ट्रवाद सोच के साथ-साथ भाई फ़राज़ की ग़ज़लों में विनम्रता और विद्रोह भी भरपूर पाया जाता है।

सुरेश समीर

डॉ. वाहिद फ़राज़, आज के दौर के ऐसे शायर जिनकी ग़जलों में प्रेम की पीर :– जो मिलन के रोमांच और विरह की तपिश में निखर कर रूहानियत तक पहुँच गई है। शायर का आदमी ऐसी दृष्टि से संप्रक्त है, जो आज के आदमी की फितरत तथा विसंगत व्यवस्था से निराश है। साथ ही उसकी कोशिश है आदमी को सही मायनों में आदमी बने देखना। सकारात्मक दृष्टि, भावनाओं की सच्चाई, अनुभूतियों की गहराई तथा अनुभूत सत्य से संयुक्त उनका यह ग़ज़ल संग्रह "दामन" वास्तव में साहित्य की दुनिया में "वाहिद फराज़"की एक पृथक पहचान बनायेगा।

यही शुभकामना है ।

———————————— डॉ. आएशा खॉन

ग़ज़ल संग्रह दामन की ग़ज़लें विधा में परिपूर्ण होकर अपने दामन में लिपटी ख़ुश्बू को दूर-दूर तक फ़ैलाने में सफ़ल हैं ऐसा प्रतीत होता है।

———————————— अनिता श्रीवास्तव तमन्ना

दामन काव्य संकलन में गंगा जमनी संस्कृति एवं उर्दू हिंदी शब्दों का समायोजन इसे लोक प्रिय बना सकता है।

———————————— सुधीरसिंह कुशवाह

भाई वाहिद फ़राज़ का ग़ज़ल संग्रह दामन प्राकृतिक सुंदरता और यथार्थ के अनुभवों से भरा पढ़ा है।

———————————— मनोहर सोलंकी मनहर

ग़ज़ल संग्रह दामन हिंदी-उर्दू ज़ुबान का गुलदस्ता बन कर पाठकों के हाथों में आया है।

———————————— दिलीप राठौर

दामन की ग़ज़ल रिवायती ग़ज़लों से हटकर नए आयाम में अपनो को ढाले हुए हैं।

———————————— आरीफ़ खान

दामन दुखी मन को आनन्दित करने वाला संग्रह है।

———————————————— प्रभाकर खिरे

भाई वाहिद फ़राज़ की शायरी अंतरमन की संवेदनाओं से ख़ुशबू लेकर काग़ज़ पर उतरती है, और आमजन की ज़बान पर आसानी से रस बस जाती है।

———————————————— राकेश वतनानी

बारिश का ख़ौफ़ सर पे सकिस्ता पड़ा है घर।
दीवार गर बनाऊँ तो छप्पर का क्या करूँ ।।

"दामन" वह ग़ज़ल संग्रह है जो एक ओर प्रणय प्रीत की बात करता है वहीं टपकते छप्पर के लिए भी चिंतित है। ग़ज़लकार अपने संग्रह में एक प्रेमी, एक चिंतक और एक समस्याग्रस्त आम व्यक्ति की भाँति उपस्थित हुआ है। ग़ज़लें कोमलकांत होने के साथ-साथ यथार्थ के कठोर धरातल पर भी चलती है। ग़ज़लों के परंपरागत भावबोध से हटकर "दामन" की ग़ज़लें वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपनपी साकिता दर्ज करती है।

इस सुन्दर संग्रह के लिए डॉ. वाहिद फ़राज़ बधाई के पात्र हैं।

———————————————— डॉ. अंजला मुवेल

डॉ. वाहिद फ़राज़ की संवेदनशील रचनाओ को पढ़कर लगता है, जीवन किन-किन हिस्सों में बटा हुआ है। दामन की ग़ज़लें संवेदनाओं का समन्दर है।

———————————————— भेरूसिंह चौहान

अहले शेख ख़ानदान और बज़्मे सईद के दामन में डॉ.वाहिद फ़राज़ के हवाले से ऐसा रोशन आफ़ताब तुलु हुआ है जो अपनी अदबी सलाहियतों के दम पर ताबनाक रह कर मुआशरे की तारीक़ी को ख़त्म करने का अज़्में मुसम्मम रखता है।

———————————————— शेख अलीमुद्दीन .आलीम.

शाईर की क़लम से

मालिको मौला का एहसाने अज़ीम है जो उसने मुझ ख़ाकससार को एक बविक़ार, जीशउर, जीईल्म और जीशान ननीहालो-ददीहाल में पैदा किया। शुक्रगुज़ार हूँ मैं उन रूहों का जिनके नूतफ़े और शिकम से गुज़रता हुआ मैं प्यारी अम्मीजान और प्यारे अब्बूजान के ज़रिये इस ख़ाकसारेगीती पर आलमें बजूद में आया।

कहा जाता है कि इंसान बज़ाते ख़ुद ईल्मों-फ़न से ज़हन को रोशन कर सकता है पर दिल पर उसका काबू नहीं चलता दिल ख़ुदादाद वह नैमत है जिसमें जज़्बातों का ख़ाज़िना हिलोरे मारता रहता है। एक कुशादा दिल और हसीन जज़्बातों की अताकर्दा दौलत से मुझमें शेरी शौक़ बचपन से ही था। दिल से निकल कर क़लम और क़ाग़ज़ के ज़रिये अश्आर में तबदील नहीं हो रहा था।

मेरी परवरिश वालिदेन के रहते हुए दादाए मोहतरम हज़रते ग़फ़ीरूद्दीन साहब की दस्ते पनाही में शफ़क़तों-मोहब्बत, हिदायतो-नसीहत के साथ होती रही। दादाए बरतर मुझे दुनियावी शउर और दीनी अमल के जाम अपनी पुरकेफ़ निगाहों से पिलाते रहे।

एक बड़े ख़ान दान ननीहालो-ददीहाल का पहला फ़रज़न्द होने के नाते मैं दादाजान का बहुत ही लाड़ला और चहीता बेटा रहा, उनकी मुहब्बतो-शफ़क़त ने मुझे अपनी मुहब्बत में दिवाना कर रखा था। 20 अक्टूबर 1978 का वह मुबारक दिन वह ख़ुशनुमा साअत जब मेरे प्यारे दादाए मग़फ़ूर ने इस दुनियाए फ़ानी से रूख़सती लेकर अबदी दुनिया को अपना ठीकाना बना, और इसी सानेहा ने मुझे शायर बनाते हुए मेरे दर्द भरे दिल में मेरी ज़िन्दगी का यह पहला मतला चश्पा किया।

कर मुझ पे करम और इनायत मेरे अल्लाह ।।
दादा को मेरे बख़्श दे जन्नत मेरे अल्लाह ।।

बस उसी दिन से मैं बग़ैर रदीफ़ों-काफ़िया, तबाआज़माई करता रहा, गालेबन उन्हीं दिनों शाईरे इमाम हज़रते असर इन्दौरी साहब क़िबला झाबुआ में तशरीफ़ फ़रामा हुए, और एक छोटे से तआरूफ़ के बाद मुझे शेरी चादर उढ़ाते हुए अपनी शागीर्दगीमें कुबूल फ़रामा लिया।

मैंने हमेशा मुआशरे में फैली बुराईयों के ख़िलाफ़ हालाते हाज़रा पर अपने वक़्त की अक्क़ासी करते हुए पेशीनगोई के साथ हिदायत भरे अश्आर कहने की कौशिश की है। अब इस बात का फ़ैसला आप करेंगे कि ये अश्आर मेरे विक़ार को किस हद तक बलन्द करते हैं।

मौक़ा है कि मैं शुक्रिया अदा करूँ माँ-बाप, भाई-बहन, अज़ीज़ो-अक़ारिब, दोस्तो-एहबाब और बीबी-बच्चों का जिनके साथ कुछ वक़्त गुजारने का मेरा हतमी फ़र्ज़ बनता था, मगर उस वक़्त भी मैं शेरगोई करता रहा, और उनकी जुबानों पर कोई गिला नहीं रहा। साथ ही अपने छोटे भाई अलीमुद्दीन की ख़िदमत को भी फ़रामोश नहीं कर सकता जिन्होंने किताब का डिज़ाईन तैयार कर मेरी बिखरी हुई बयाज़ को किताब की शक्ल देकर मेरे अश्आर को संवारा है।

ख़ासतौर से इस मजमूआ को शाया करने के लिए हिम्मतो-हौसला बख़्श ने वाले बड़े भाई डॉ. महेश कुमार सड़ैया का मैं कर्ज़दार हूँ, जिन्होंने मेरी पुश्तपनाही की, उसी का नतीजा है कि आज मेरा शेरी मजमूआ आपके हाथों तक पहुँचा है। अब इन्तेज़ार और इस्क़बाल है आपके बेबाक तफ़सिरे का।

शुक्रिया......

ख़ाकसार

डॉ. वाहिद फ़राज़

दामन

मजमूआ-ए-ग़ज़ल

डॉ. वाहिद फ़राज़

मांगता हूँ मैं जो उससे वो सिवा[1] देता है ॥
मेरी औक़ात मेरे क़द से बड़ा देता है ॥

मुझको एज़ाज़[2] ज़माने से दिलाता है वही ।
ऐब[3] मेरे वो जहाँ भर के छुपा देता है ॥

तुम से चाहत नहीं कोई भी ज़माने वालों ।
जो भी देता है मुझे मेरा ख़ुदा देता है ॥

देखते हैं मुझे हैरत[4] से मिटाने वाले ।
जब वो चाहता है मेरे क़द को बड़ा देता है ॥

मैं अक़ीदत[5] से जबीं[6] अपनी झुका देता हूँ ।
वो गुनाह मेरे पहाड़ों से मिटा देता है ॥

गर जो मिलना है किसी से तो दुआऐं माँगो ।
वो ही बिछड़ों को ज़माने में मिला देता है ॥

मुझ गुनहगार पे एहसान है उसका ए फ़राज़ ।
काम बिगड़े वो ज़माने में बना देता है ॥

1-अधिक, 2-पुरस्कार, 3-अवगुण, 4-आश्चर्य, 5-श्रद्धा,
6-मस्तक।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

मांगता हूँ मैं जो उससे वो सिवा[1] देता है ॥
मेरी औक़ात मेरे क़द से बड़ा देता है ॥

मुझको एज़ाज़[2] ज़माने से दिलाता है वही।
ऐब[3] मेरे वो जहाँ भर के छुपा देता है ॥

तुम से चाहत नहीं कोई भी ज़माने वालों।
जो भी देता है मुझे मेरा ख़ुदा देता है ॥

देखते हैं मुझे हैरत[4] से मिटाने वाले।
जब वो चाहता है मेरे क़द को बड़ा देता है ॥

मैं अक़ीदत[5] से जबीं[6] अपनी झुका देता हूँ।
वो गुनाह मेरे पहाड़ों से मिटा देता है ॥

गर जो मिलना है किसी से तो दुआएं माँगो।
वो ही बिछड़ों को ज़माने में मिला देता है ॥

मुझ गुनहगार पे एहसान है उसका ए फ़राज़।
काम बिगड़े वो ज़माने में बना देता है ॥

1-अधिक, 2-पुरस्कार, 3-अवगुण, 4-आश्चर्य, 5-श्रध्दा, 6-मस्तक।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

अज़्मो-हिम्मत[1] को बढ़ा कर के हिमाला कर दे ॥
क़ल्बे-आसी[2] को मुहब्बत का शिवाला कर दे ॥

दौलते-ईल्म[3] अता कर के समन्दर की तरह ।
मेरे अश्आर को दुनिया में दोबाला कर दे ॥

मुझको अख़्लाक़[4] के पेकर[5] में सजा कर फिर से ।
मेरे किरदार[6] को आला से भी आला कर दे ॥

ज़ुल्मते ग़म को मिटा कर के मेरी राहों से ।
मेरी क़िस्मत में भी तू फिर से उजाला कर दे ॥

बुग़्ज़ो-कीना[7] को अदावत को मिटा कर दिल से ।
मुझको इन्सान ज़माने में निराला कर दे ॥

1 -बहादुरी, 2 -पापी मन, 3-ज्ञान भण्डार, 4- चरित्र, 5-मूर्तिरूप/आकार, 6-अभिनय, 7-बुराई/गंदगी।

डॉ. वाहिद फ़राज़
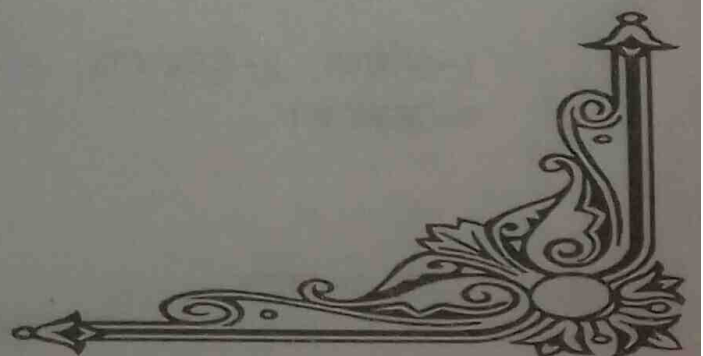
ग़ज़ल

कश्ती आँखों को तो अश्कों को समन्दर कर दे ।।
मेरी परवाज़[1] को एहसास[2] के अन्दर कर दे ।।

मैं जो अपने लिये चाहूँ न अता कर मुझको ।
पर तू मज़लूम[3] की आहों को तो खन्जर कर दे ।।

बद[4] नज़र से कोई देखे किसी बेटी की तरफ ।
एसी गुस्ताख़ निगाहों को तू पत्थर कर दे ।।

इनको मोहताज न दुनिया में किसी का रखना
मेरे मालिक मेरे बच्चों को सिकन्दर कर दे ।।

सदक़े माँ बाप के क़दमों के अता कर मझको ।
मेरे तारीक मुक़द्दर को मुनव्वर[5] कर दे ।।

पाँव खिचते हैं मेरा जो भी हसद[6] से या रब ।
उनके क़द[7] को भी बढ़ा मेरे बराबर कर दे ।।

1- उड़ान 2-भावना 3-पीड़ित 4-बुरी 5-प्रकाशवान 6-छल 7- व्यक्तित्व

डॉ. वाहिद फ़राज़
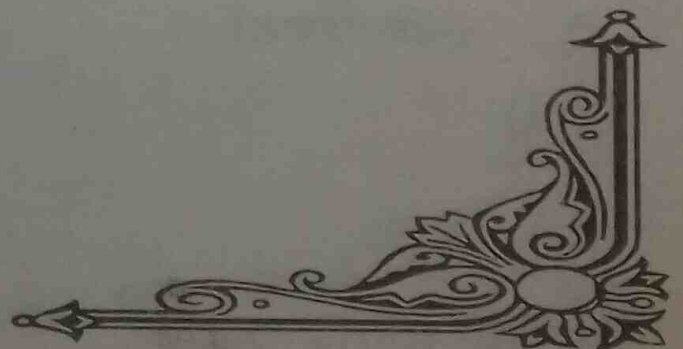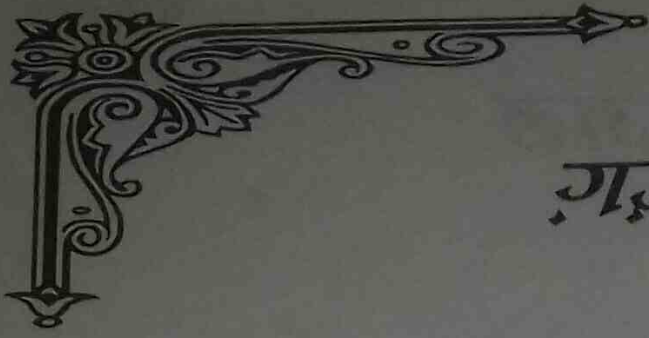
ग़ज़ल

है प्यार अगर मुझसे जताने के लिये आ ॥
इन्कार अगर है तो बताने के लिये आ ॥

आ फूल ही गुलशन में खिलाने के लिये आ ॥
रोते हुए चहरों को हँसाने के लिए आ ॥

फिर आस के दीपक को जलाने के लिय आ ॥
मायूसिए ज़ुल्मत को मिटाने के लिये आ ॥

फिर ख़्वाब मुझे कोई दिखाने के लिये आ ॥
तू रंजो अलम मेरे बढ़ाने के लिये आ ॥

तू आ तो सही मूझको रूलाने के लिये आ ॥
पलकों पे मेरी अश्क सजाने के लिये आ ॥

गर मुझको मिटाना है मिटाने के लिये आ ॥
बिजली ही नशेमन[1] पे गिराने के लिये आ ॥

1-डेरा/निवास।

डॉ. वाहिद फ़राज़
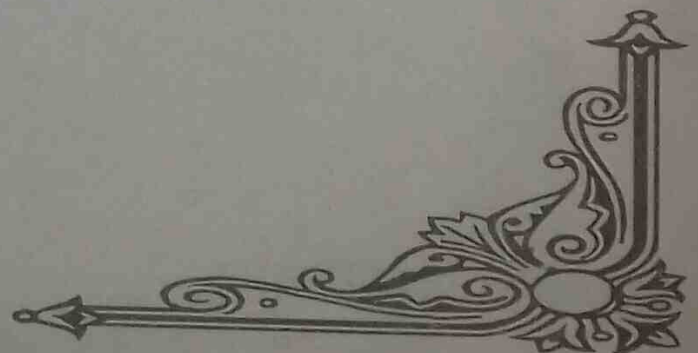
ग़ज़ल

चैन उसको भीं न आया देर तक।
वक़्ते रुख़सत में भी रोया देर तक॥

उनकी क़िस्मत के अन्धेरों के लिये।
मैंने अपना घर जलाया देर तक॥

दिन, महीने, साल या दो साल बस।
किसने किसका ग़म मनाया देर तक॥

रोशनी में उसको मैं खोजा किया।
गुम था मुझ में मेरा साया देर तक॥

उठ फ़जर की हो रही है अब अज़ाँ[1]।
माँ ने मुझको यूँ जगाया देर तक॥

या ख़ुदा उस्ताद और माँ बाप का।
मेरे सर पर रखना साया देर तक॥

याद कर माँ ने कहा था ए फ़राज़।
धूप रहती है न साया देर तंक॥

1-मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का आमंत्रण।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
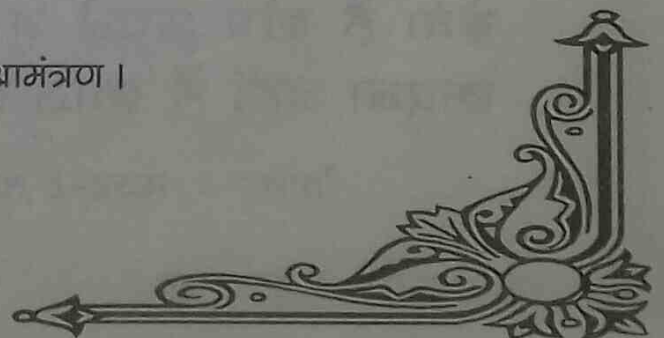
मज़लूम बेकसों को सताता है आदमी ।।
इन्सानियत के नाम पे धब्बा है आदमी ।।

ग़ैरत ज़मीर बेच के ज़िन्दा है आदमी ।।
ज़िन्दा नहीं है आज भी मुर्दा है आदमी ।।

नश्तर ज़बाँ से अपनी लगाता है आदमी ।।
नाहक़ किसी के दिल को दुखाता है आदमी ।।

दीवाना हो गया है ये मज़हब के नाम पर ।
क्यों बस्तियों में आग लगाता है आदमी ।।

जिस्मों को नौचता है मुहब्बत के नाम पर ।
शक्ले-बशर[1] में आज दरिन्दा है आदमी ।।

रखता नहीं है हाथ यतिमों के सर कभी ।
कुत्तों की खाज ख़ूब खुजाता है आदमी ।।

हरसू[2] नफ़स[3] का शोर है हरसू मफ़ाद[4] है ।
हैवानियत की भीड़ में खोया है आदमी ।।

देता है दोष अपने मुक़द्दर को ए फ़राज़ ।
करना नहीं हैं काम वो करता है आदमी ।।

1-इंसान की सूरत, 2-हर तरफ़, 3-इच्छा, 4-झगड़ा

डॉ. वाहिद फ़राज़
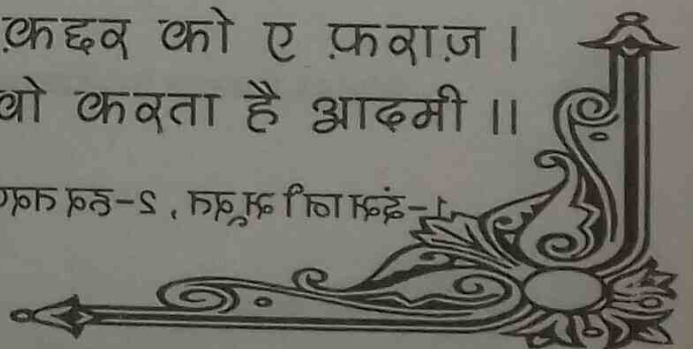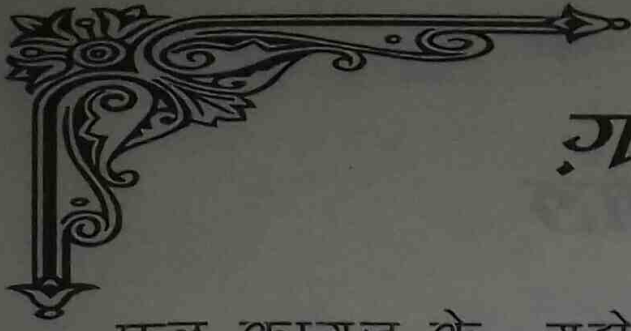
फूल काग़ज़ के मुझे वो खेत बंजर दे गया।।
वक़्त कैसे दिल दुखाने वाले मंज़र दे गया।।

जिसके बच्चों को सबक़ मैंने सिखाया प्यार का।
आज ज़ालिम मेरे बच्चों को वो ख़न्जर दे गया।।

सेज फूलों की सजाई जिसकी राहों में वही।
दिल को मेरे आज देखो कैसे नश्तर दे गया।।

तुमको नफ़रत मालो-ज़र[1] से ख़ुद बख़ुद हो जाएगी।
याद करलो उस सबक़ को जो सिकन्दर दे गया।।

पूर सुकूँ था मन समन्दर मुतमईं[2] थी ज़िन्दगी।
फिर से यादों के मुझे वो सर पे पत्थर दे गया।।

अज़्म[3] मेरा देख कर वो पारा-पारा हो गया।
सीप आकर मेरे हाथों में समन्दर दे गया।।

वक़्त ने और क्या दिया है मुझको ज़ुल्मत के सिवा।
उसको विरसे में हमेशा माहो-अख़्तर[4] दे गया।।

1-धन दौलत, 2-संतुष्ट 3-साहस 4-चाँद सितारे ।

डॉ. वाहिद फ़राज़
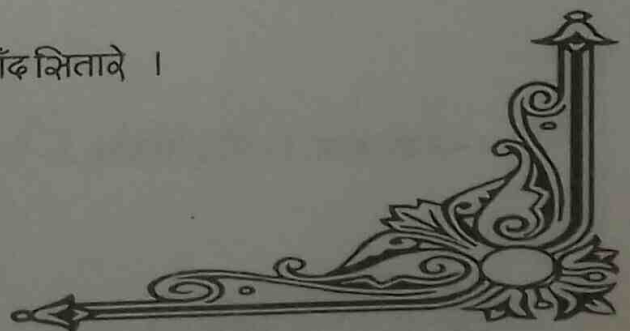
ग़ज़ल

मकसद तो कोई ज़ीस्त का अपनी बना के जी ॥
परचम तू कोई हाथ में अपने उठा के जी ॥

हुस्ने अमल[1] से दोस्त तू क़िस्मत जगा के जी ।
बंजर ज़मी के सीने पे गुलशन लगा के जी ॥

एहसासे-कमतरी[2] को मिटाने के वास्ते ।
हिम्मत से काम ले ज़रा सर को उठा के जी ॥

सब्रो-रज़ा[3] के फूल खिलाना हैं फिर तुझे ।
अपने क़दम को राहे वफ़ा में बढ़ा के जी ॥

आँसू अगर मिलें तो तू शबनम बना उसे ।
गौहर खुशी के सारे जहाँ पे लूटा के जी ॥

मकरो-फ़रेब[4] धोखे से बदकारियों[5] से बच ।
गर हो सके तो इनसे तू दामन बचाके जी ॥

रोशन सलफ़[5] के नक्शे क़दम है अभी फ़राज़ ॥
सीने से दुश्मनों को भी अपने लगा के जी ॥

1-नेक काम, 2-हीन भावना, 3-धैर्य, 4-षड़यंत्र , 5-कुकर्म

डॉ. वाहिद फ़राज़
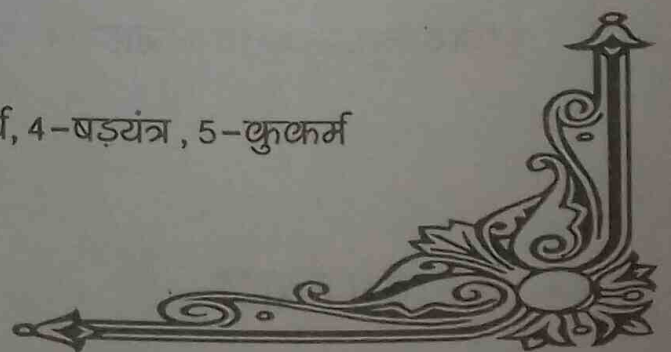
वो बर्फ़ का तो नहीं था पिघल गया कैसे ।।
वो मेरे इश्क़ के साँचे में ढल गया कैसे ।।

किसी की आँख से आँसू निकलने वाले हैं।
चराग़ मेरी वफ़ाओं का जल गया कैसे ।।

क़सम न आने की खा कर भी लौट आया है।
इरादा उसका न जाने बदल गया कैसे ।।

कहाँ फ़साना शबे ग़म का मैंने छेड़ा है ।
अभी से आँखों का दरिया उबल गया कैसे ।।

वो मेरे अज़्मे-मुसमम्म[1] से डर गया होगा
मिज़ाजे-गर्दिशे-दोरॉ[2] बदल गया कैसे ।।

अभी तो इश्क़ की आतीश लगी नहीं है फ़राज़।
अभी से हुस्न का तेवर बदल गया कैसे ।।

1-साहस की ऊँचाईयां, 2-काल चकृ की दिशा।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

लब पे अपने गुलाब रखता हूँ ।।
सूर्ख शौलों की ताब रखता हूँ ।।

केशो लेज़र तो मैं नहीं रखता ।
ऊँगलियों पे हिसाब रखता हूँ ।।

लोग कहते हैं आईना जिसको।
ऐसी रोशन किताब रखता हूँ ।।

बर्फ़ जैसा मिज़ाज है मेरा।
दुश्मनों पर इताब रखता हूँ ।।

नींद रूठी है मझसे रातों की ।
फिर भी आँखों में ख़्वाब रखता हूँ।।

घर में शीशे सजा के रक्खे है ।
हर किसी का जवाब रखता हूँ ।।

कौन रूस्वा हो मैक़दे जा कर।
घर में देशी शराब रखता हूँ ।।

1–गुण।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

तेरे नैना चंचल-चंचल ॥
तेरी बाहें कोमल-कोमल ॥

तेरी आँखें झील सी गहरी ।
तेरे आँसू निर्मल-निर्मल ॥

तेरे नगर में जब भी आऊँ ।
लोग पुकारें पागल-पागल ॥

सारे नगर में जब ना पाया ।
तुझको ढूँढ़ा जंगल-जंगल ॥

प्यार के नग़में किसने छेड़े ।
नाच उठी है पायल-पायल ॥

देख के तेरी भीगी आँखें ॥
सब के दिल थे घायल-घायल ॥

देख के तेरा हुस्ने-सरापा[1] ।
मन था मेरा बेकल-बेकल ॥

1-सर से पेर तक सुन्दर ।

ग़ज़ल
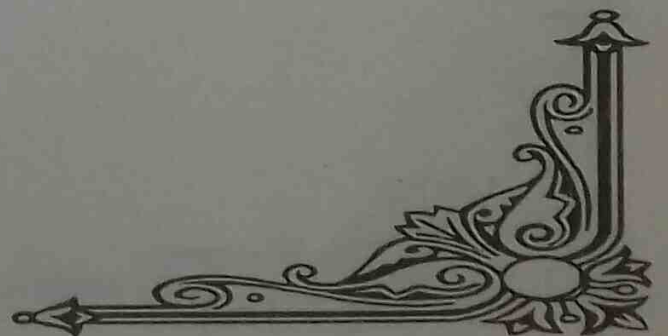
कौन फिरता है निगाहों में उजालों की तरह ॥
मेरे जज़्बात सुलगते है सराबों[1] की तरह ॥

मैं अन्धेरों में भी रोशन[2] हूँ उजालों की तरह ॥
यानी ज़ुल्मत में चमकता हूँ सितारों की तरह ॥

जो भी करते हैं दीए इल्मो-वफ़ा के रोशन ।
याद रखते हैं उन्हें लोग मिसालों की तरह ॥

दीप उसने ही मेरे घर का बुझाया यारों ।
जिसकी राहों में जला था मैं चराग़ों की तरह ॥

वो भी तूफ़ान की साजिश में हुआ है शामिल ।
मैंने समझा था जिसे अपने किनारों की तरह ॥

मेरी खुशियां किसी मौसम की तलबगार नहीं ।
मैं ख़िज़ाओं में भी हँसता हूँ बहारों की तरह ॥

तू ही तन्हा नहीं उल्फ़त में परेशाँ ए फ़राज़ ।
उनकी ज़ुल्फ़ें भी परेशां हैं ख़यालों की तरह ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़
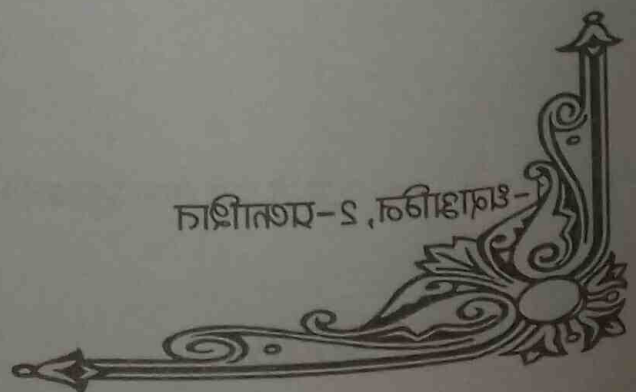
ग़ज़ल

चैन आया नहीं तेरे जाने के बाद ॥
ख़ूब रोया हूँ मैं दिल दुखाने के बाद ॥

दूर वो हो गये दिल लगाने के बाद ॥
याद आते रहे दूर जाने के बाद ॥

थे अन्धेरे मेरे दिल पे छाए हुए ।
शम्अ रोशन हुई तेरे आने के बाद ॥

जुस्तजू हसरतें चाहतें आरज़ू ।
कुछ भी बाक़ी नहीं तेरे जाने के बाद ॥

रोज़ लड़ते थे जो हम से दुश्मन वही ।
याद आए बहुत दूर जाने के बाद ॥

थी हँसी आरज़ी[1] उसके लब पर फ़राज़ ।
ख़ूब रोया है वो मुस्कुराने के बाद ॥

1-बनावटी ।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

ख़ुदा जाने मुहब्बत का नतीजा और क्या निकले ॥
जिसे अपना समझ बैठे वही तो बेवफ़ा निकले ॥

जला के ख़ाक कर डाला मेरे ख़्वाबों के गुलशन को।
कहो लब से हमारे फिर कोई कैसे दुआ निकले ॥

ख़ुदाया ख़ैर अब करना मुहब्बत में उलझ बैठे।
जिन्हें कल दे दिया था दिल वो पत्थर के ख़ुदा निकले ॥

ये एहसासे ग़लत फ़हमी अभी से हो गया रोशन।
जिसे राज़ी समझते थे वो चिलमन से ख़फ़ा निकले ॥

मुहब्बत में जो तोहफ़े प्यार से भेजे थे फूलों के ।
फफोले बन के वो देखो जहाँ में लावा निकले ॥

अदा निकले हया निकले दुआ निकले क़ज़ा निकले ॥
हमें उनसे ग़रज़ क्या है मुहब्बत के सिवा निकले ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

झूठी क़स्में खा लो बाबा ॥
आई बला को टालो बाबा ॥

रिश्वत के हैं दरिया बहते ।
डुबकी तुम भी खा लो बाबा ॥

जब भी बोलो झूठ ही बोलो ।
आदत ऐसी डालो बाबा ॥

कुर्सी आख़िर कुर्सी है बस ।
जैसे-तैसे पा लो बाबा ॥

धर्मो मज़हब की आग लगी है ।
तुम भी हाथ तपा लो बाबा ॥

बहरों की इस बस्ती में तुम ।
राग कोई भी गा लो बाबा ॥

जाहिलों की महफ़िल है ये ।
अपने शेर बचा लो बाबा ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

जान पहचान कर गया कोई ।।
फिर परेशान कर गया कोई ।।

मेरी आँखों से पौछ कर आँसू ।
मुझ पे एहसान कर गया कोई ।।

मुझको यादों की तितलियाँ दे कर ।
राह आसान कर गया कोई ।।

रोनक़े-बज़्म[1] पूछते क्या हो ।
कब से विरान कर गया कोई ।।

अपनी उल्फ़त का पास रखने को ।
ख़ुद को क़ुरबान कर गया कोई ।।

छुप गया क्या वो मेरी नज़रों से ।
दुनिया विरान कर गया कोई ।।

तोड़ कर रिश्त-ए दिल ए फ़राज़ ।
आज हैरान कर गया कोई ।।

1 - महफ़िल की सुन्दरता ।
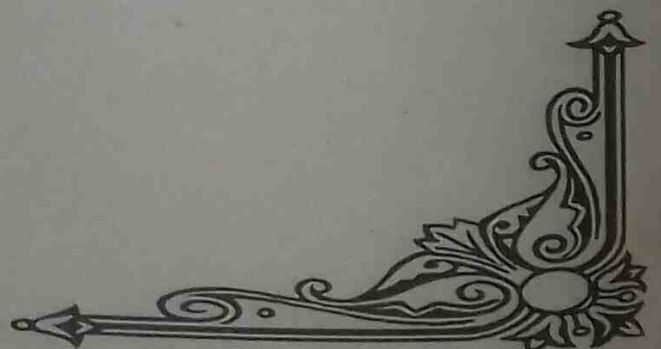
ग़ज़ल

तस्वीर उसकी दिल से मिटाने के बावजूद ।।
आती रही है याद भुलाने के बावजूद ।।

उल्फ़त को उसकी दिल से मिटाने के बावजूद ।।
यादों का सिलसिला था ज़माने के बावजूद ।।

आए नहीं हैं घर वो बुलाने के बावजूद ।।
रोनक़ नहीं थी घर को सजाने के बावजूद ।।

शिकवा ज़ुबाँ पे हमने न आने दिया कभी ।
आँसू निकल पड़े हैं छुपाने के बावजूद ।।

उसकी ख़ुशी को और बढ़ाने के वास्ते ।।
हँसते रहे हैं दिल को जलाने के बावजूद ।।

अफ़सोस दूर उनके अन्धेरे न कर सके ।
राहों में उनकी दिल को जलाने के बावजूद ।।

बाक़ी हैं बाग़बाँ की नज़र में शरारतें ।
गुलशन को मेरे आग लगाने के बावजूद ।।

होंठों पे आज भी है तबस्सुम फ़राज़ के ।
सदमें हज़ार दिल पे उठाने के बावजूद ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़
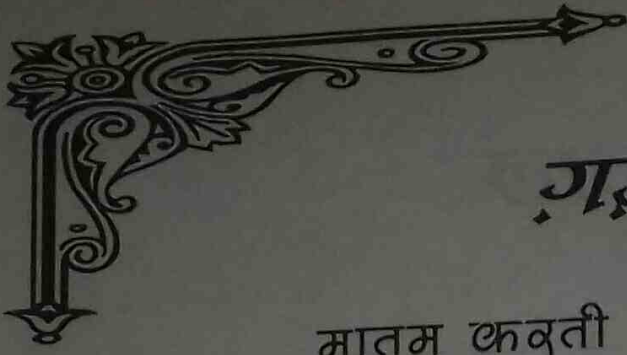
मातम करती आज ग़ज़ल है ॥
आहें भरता नील-कमल है ॥

उसके भी तो आँसू पौछो ।
सबके आँसू गंगा जल है ॥

राज-महल में रहने वालों ।
मेरा घर भी ताज महल है ॥

तुम जो कहो तो मर जाएं हम ।
ऐसा का कहना कितना सरल है ॥

ये है मंदिर ये है मस्जिद ।
सोच समझ का फेर-बदल है ॥

ख़ूबी देखो ऐब निकालो ।
अपनी आदत अपना अमल है ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
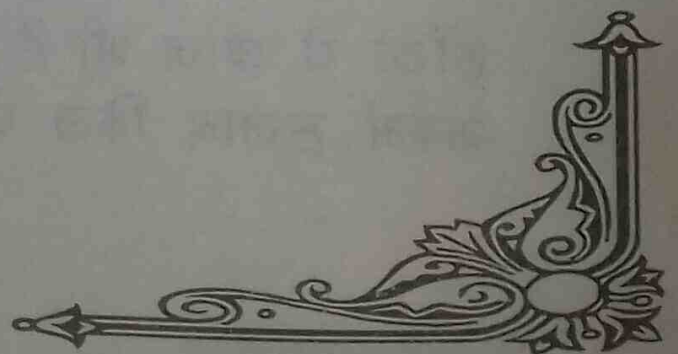
बन के दीवाने तेरे गुज़र जाएंगे ।।
लोग इल्ज़ाम देंगे जिधर जाएंगे ।।

अपनी क़िस्मत में काँटे भले हों मगर ।
तेरा दामन तो फूलों से भर जाएंगे ।।

हमने छेड़ा कभी गर जो ज़िकरे वफ़ा ।
कितने लोगों के चहरे उतर जाएंगे ।।

ख़ून के लोग रोएंगे आँसू फ़राज़ ।
हम ग़ज़ल पढ़के जब भी गुज़र जाएंगे ।।

तेरे चहरे पे गर जो हँसी आ गई ।
आईने खुद ब-खुद ही संवर जाएंगे ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़
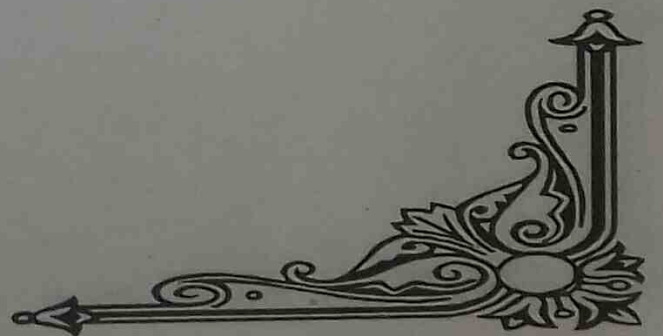
ग़ज़ल

हमने माना हसीं है तुम्हारी ग़ज़ल ।।
तुमने देखी कहाँ है हमारी ग़ज़ल ।।

सोलह सावन में देखो नहाए हुए।
मेरे आँगन में आई कुँआरी ग़ज़ल ।।

संगे मर-मर से कोई तराशा बदन।
ऐसी लगती है मेरी वो प्यारी ग़ज़ल ।।

उसकी आँखों में जलवे बिखरने लगे।
जिस किसी ने भी मेरी निहारी ग़ज़ल ।।

रात भर चाँदनी में नहाती रही।
सुबह शबनम ने मेरी संवारी ग़ज़ल ।।

मेरे होंठों को बोसे वो देती रही।
मैंने दिल में जो अपने उतारी ग़ज़ल ।।

ज़ोर नज़्मों ने यूँ तो लगाया बहुत।
दोस्तों फिर भी हिम्मत न हारी ग़ज़ल ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

तस्वीर मैंने देखी अपनी उथल-पुथल के ॥
हैरान हो गया हूँ शीशे बदल-बदल के ॥

किसको दुआऐं दूँ मैं किस पर उठाऊँ ऊँगली ।
मारे हैं मुझ को पत्थर सबने उछल-उछल के ॥

अस्मत लुटी किसी की मारा गया है मुन्सिफ़[1] ।
देखे है लोग क्या ये घर से निकल-निकल के ॥

किसका सनम है झूठा किससे सनम है रूठा ।
राहों में फूल फेके किसने मसल-मसल के ॥

बिस्तर की सिलवटों से मालूम हो रहा है ।
निकला है दम किसी का करवट बदल -बदल के ॥

फ़ुरक़त में उम्र मेरी गुज़री फ़राज़ जैसे ।
पानी बग़ैर मछली तड़पे मचल-मचल के ॥

1-इन्साफ़ करने वाला

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

राात तारीक[1] है दिल अपना जलाया जाए ॥
राहे उल्फ़त के अन्धेरों को मिटाया जाए ॥

दिल में सोए हुए अरमां को जगाया जाए ॥
फिर से एहसास मुहब्बत का कराया जाए ॥

याद माज़ी[2] के फ़सानों को दिलाया जाए ॥
प्यार के नाम से फिर उसको रूलाया जाए ॥

राज़े उल्फ़त न कोई हम से छुपाया जाए ॥
आज मौक़ा है चलो सब को बताया जाए ॥

हम को मदमस्त यूं जलवों से बनाया जाए ॥
अब न चहरे पे ये ज़ुल्फ़ों को गिराया जाए ॥

बे-वजह यूं ही न अब उसको रूलाया जाए ॥
कोई क़िस्सा न जुदाई का सुनाया जाए ॥

अम्न के फूल को दुनिया में खिलाया जाए ॥
प्यार की शम्अ को घर-घर में जलाया जाए ॥

1-अंधेरा, 2-अतीत

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

चाँद से चहरे को आँचल में छुपाए रखना ।।
ये ख़ज़ाना है लुटेरों से बचाए रखना ।।

अपने होंठों पे तबस्सुम को सजाए रखना ।।
ज़ख़्म जितने भी हों गहरे तो छुपाए रखना ।।

कोई आँसू न मेरी याद में बहने पाए ।
मेरे ख़्वाबों को तू पलकों पे सजाए रखना ।।

मेरी राहों के अन्धेरों को ज़िया[1] बख़्शेंगे ।
अपने आँचल में सितारों को सजाए रखना ।।

क़ाम दुनिया का है इस पर न भरोसा करना ।
माँग अपनी तू सितारों से सजाए रखना ।।

मुझको महफ़ूज़ ज़माने से जो रखना है फ़राज़ ।
तू मुझे अपने ख़यालों में बसाए रखना ।।

1-रोशनी

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

चाँद से चहरे को आँचल में छुपाए रखना ।।
ये ख़ज़ाना है लुटेरों से बचाए रखना ।।

अपने होंठों पे तबस्सुम को सजाए रखना ।।
ज़ख़्म जितने भी हों गहरे तो छुपाए रखना ।।

कोई आँसू न मेरी याद में बहने पाए ।
मेरे ख़्वाबों को तू पलकों पे सजाए रखना ।।

मेरी राहों के अन्धेरों को ज़िया[1] बख़्शेंगे ।
अपने आँचल में सितारों को सजाए रखना ।।

क़ाम दुनिया का है इस पर न भरोसा करना ।
माँग अपनी तू सितारों से सजाए रखना ।।

मुझको महफ़ूज़ ज़माने से जो रखना है फ़राज़ ।
तू मुझे अपने ख़यालों में बसाए रखना ।।

1-रोशनी
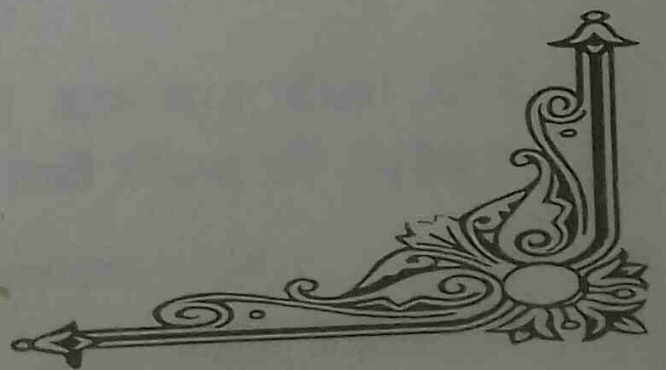
डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

सभी ने देखा है मुझको जिगर नहीं देखा ।।
किसी ने मेरे इरादों का घर नहीं देखा ।।

तमाम उम्र ख़यालों में जो रहा मेरे ।
क़सम ख़ुदा की उसे उम्र भर नहीं देखा ।।

नज़र बचाके जो गुज़रा मेरी निगाहों से ।
नज़र उठाके उसे एक नज़र नहीं देखा ।।

हज़ार उसने बनाए हसीन चहरे पर ।
जहाँ में कोई भी उससा बशर नहीं देखा ।।

तमाम उम्र जो मरने की चाह रखता था ।
फ़राज़ उसकी ही आँखों में डर नहीं देखा ।।

कभी जो भूल के माँ बाप को दुआ मांगी ।
फ़राज़ ऐसी दुआ में असर नहीं देखा ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़
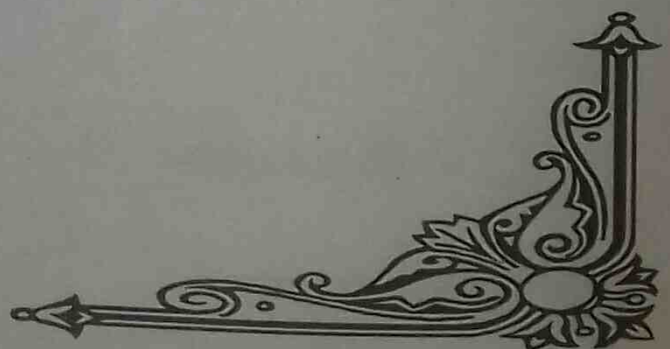
ग़ज़ल

नहीं भाती मेरे दिल को किसी गुलज़ार की ख़ुश्बू।।
सबा[1] ला कर मुझे दे दे दयारे यार की ख़ुश्बू।।

मुबारक हो चमन तुमको जहाँने मुश्को अम्बर का।
मेरे हिस्से में आई है किसी के प्यार की ख़ुश्बू।।

तमन्ना है न हसरत है न कोई आरज़ू दिल में।
बसा के दिल में रखली है जमाले यार की ख़ुश्बू।।

मोअत्तर[2] रूह भी है और मोअत्तर हो गया दिल भी।
नसीमे सुबह लाई है वो ज़ुल्फ़े यार की ख़ुश्बू।।

गुलाबो, मोगरा, चम्पा, चमेली, नस्तरन, जूही।
भली है मुश्को अम्बर से किसी दिदार की ख़ुश्बू।।

मेरे शेरों में लिपटी है मुहब्बत जा बजा उसकी।
ज़माना जानता है ये मेरे अश्आर की ख़ुश्बू।।

छुपा कर वो किताबों में इसे तो रख नहीं सकते।
वरक़ पलटेंगे आएगी मेरे अश्आर की ख़ुश्बू।।

चवदवीं रात में मैंने उसे इक बार देखा था।
मेरी ऑखों में अब तक है उसी दीदार की ख़ुश्बू।।

1-पश्चिम से पूरब की ओर बहने वाली हवा, 2-सुगंधित

डॉ. वाहिद फ़राज़
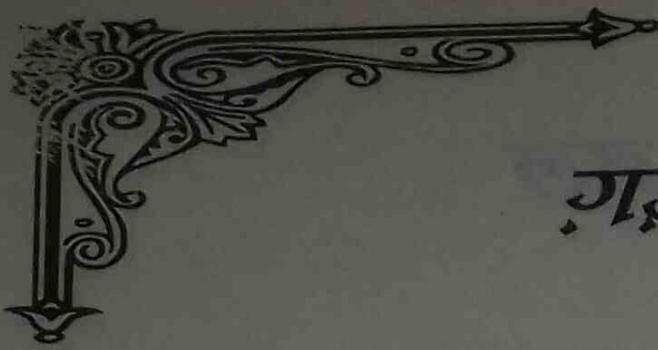
ग़ज़ल

इश्क़ का दुश्मन सारा ज़माना कल भी था और आज भी है ॥
मेरे लबों पर तेरा फ़साना कल भी था और आज भी है ॥

गौरी बाहें चाँद सा चहरा और नज़ाक़त फूलों सी।
आँखों में वो रंगीन ज़माना कल भी था और आज भी है ॥

घर की खिड़की खोल सड़क पर अपनी आँखें पथराना।
राह में तेरी पलकें बिछाना कल भी था और आज भी है ॥

याद में तेरी शब भर रोना सुबह सवेरे सो जाना
याद में तेरी ख़ुद को जगाना कल भी था और आज भी है ॥

ख़ून का रिश्ता जन्म का बन्धन टूटते सब को देखा है।
तेरा मेरा इश्क़ पुराना कल भी था और आज भी है ॥

मुझको जहाँ से मतलब क्या है कब मैं किसी से डरता हूँ।
तेरी गली में आना जाना कल भी था और आज भी है ॥

रोज़े अज़ल से मेरी नज़र में तेरे जलवे पिन्हा है।
याद में तेरी ख़ुद को मिटाना कल भी था और आज भी है ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़
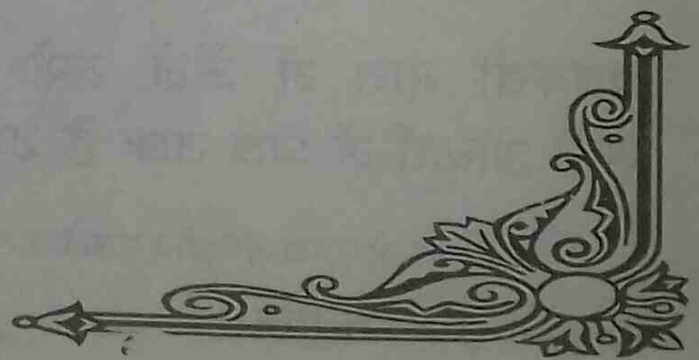
अगर चे रात में तुम भी जो घर गये होते ॥
अन्धेरा देख के घर का तो डर गये होते ॥

उदासियों की अगर सिसकियाँ सुनी होतीं ।
तुम्हारे कान भी ज़ख़्मों से भर गये होते ॥

निकल के चाँद जो हमको न रोशनी देता ।
अन्धेरी रात में हम कब के मर गये होते ॥

ख़ुदा ने गर न हमें हौसला दिया होता ।
हम अपने आप के साए से डर गये होते ॥

लहद में लेटे हुए वो न आज पछताते ।
भरोसा हक़ पे जो दुनिया में कर गये होते ॥

फ़राज़ तुम से जो अपनी मैं दास्ताँ कहता ।
तुम्हारी आँख के दरिया भी भर गये होते ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

फूलों का जिगर शाख़ो-शजर[1] काट रहा है ।।
क्या कुछ न ज़माने में बशर काट रहा है ।।

इस दौर के इन्सान की फितरत ही अलग है ।
ये अपने अज़ीज़ों ही के सर काट रहा है ।।

तकसीम[2] से बदला है ज़हन भाई का कैसा ।
आंगन में लगा मेरे शजर काट रहा है ।।

क्या जानिये है कौनसी मंज़िल का मुसाफ़िर ।
इन्सान तो मुद्दत से सफ़र काट रहा है ।।

रह-रह के टपकती है दरीचों से उदासी ।
तन्हाई का आलम है ये घर काट रहा है ।।

ईल्ज़ाम तबाही का किसे दें ए फ़राज़ अब ।
गुलज़ार में गुलची[3] ही शजर काट रहा है ।।

1-पेड़/डाली, 2-बंटवारा, 3-माली

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

प्यार छुप-छुप के जताते हैं जताने वाले ।।
चैन से जीने नहीं देते ज़माने वाले ।।

इश्क़ की राह तो ख़तरों से भरी है यारों ।
फूल राहों में कहाँ लोग बिछाने वाले ।।

मिट गये ख़ुद ही निशाँ तक न रहा है बाक़ी ।
इश्क़ दुनिया से जो आऐ थे मिटाने वाले ।।

पढ़ के हालात का चहरा क्या कभी देखा है ।
अपनी आँखों में हसीं ख़्वाब सजाने वाले ।।

तेरी राहों में भी अश्क़ों के जलाऊँगा दीए ।
मेरी राहों के अन्धेरों को मिटाने वाले ।।

मेरा दावा है ज़माने में कभी भी ए फ़राज़ ।
चैन पाते नही औरों को जलाने वाले ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

दुख दर्द कितना रोज़ उठाती हैं बेटियाँ ॥
शिकवा ज़ुबाँ पे फिर भी न लाती हैं बेटियाँ ॥

ख़ुशियों के बाग़ घर में लगाती हैं बेटियाँ ॥
जन्नत सा अपने घर को बनाती हैं बेटियाँ ॥

रहमत ख़ुदा की साथ में लाती हैं बेटियाँ ॥
सोए नसीब घर के जगाती हैं बेटियाँ ॥

बूढ़े जवान बच्चों का रखती हैं ये ख़याल ।
हर तरह नाज़ सबके उठाती हैं बेटियाँ ॥

दिल में छुपा के अपने ये रंजो मलाल को ।
ख़ुशियाँ जहाँ की हम पे लुटाती हैं बेटियाँ ॥

करती हैं काम सब के वो हँस-हँस के रात दिन ।
मेहनत से अपनी फूल खिलाती हैं बेटियाँ ॥

ख़िदमत वो वाल्देन की करती हैं रात दिन ।
कुरबान भाईयों पे भी जाती हैं बेटियाँ ॥

आँखों से वालिदेन की आँसू को पोछ कर ।
ऊँगली जला के आग बुझाती हैं बेटियाँ ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

जो बोलूँगा सच बोलूँगा ।।
अपनी ज़ुबाँ में जब खोलूँगा ।।

तेरी ख़ुशी पर भारी होंगे।
अपने आँसू जब तोलूँगा ।।

मैंने माना ख़ुश्बू हूँ पर ।
कैसे सब के संग हो लूँगा ।।

क़ैद में ख़ुद को पाओगे तुम ।
अपनी आँखें जब खोलूँगा ।।

सच तो आख़िर कड़वा फिर ।
कैसे ज़ुबाँ में रस घोलूँगा ।।

अपने घर में पेड़ लगा कर ।
घर में ख़ुशियाँ मैं बो लूँगा ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

ग़ाज़ी[1] जो होगा वो ही तो ख़न्जर उठाएगा ॥
दीवाना अपने हाथ में पत्थर उठाएगा ॥

पलकों पे अपनी कौन ये मन्ज़र उठाएगा ॥
नौक़े क़लम से कौन समन्दर उठाएगा ॥

बातिल[2] को अपने आगे न टिकने दिया कभी ।
सर अपने आगे कौन सितमगर उठाएगा ॥

शब भर जो तेरी याद में सौया नहीं उसे ।
कैसे तुलू-ए-सुबह[3] का मन्ज़र उठाएगा ॥

पल में ज़माने भर के बदल देगा वो नसीब ।
जब भी निगाहें अपनी क़लन्दर उठाएगा ॥

पहुँचेगा देखना वही साहिल पे ए फ़राज़ ।
हिम्मत से हौसलों से जो लंगर उठाएगा ॥

1-वीर पुरुष, 2-बनावटी, 3-उषाकाल

डॉ. वाहिद फ़राज़

ज़ुल्फ़ खोले हुए आते हैं वो घर शाम के बाद ।।
तेज़ हो जाता है ख़ुश्बू का सफ़र शाम के बाद ।।

फिर सरे शाम से होती है ये शम्अ रोशन ।
उनकी आमद से महकता है ये घर शाम के बाद ।।

धूप ढलते ही बदल जाता है इनका भी मिज़ाज ।
सूर्ख़ हो जाते हैं सब ज़ख़्में जिगर शाम के बाद ।।

देख कर अब पपीहा कोई प्यासा नाचे ।
रक्स[1] सीने में यूं करता है जिगर शाम के बाद ।।

दिल तो बैचेन-सा रहता है ख़यालों में मगर ।
उनकी राहों में भटकती है नज़र शाम के बाद ।।

इस को आदत-सी पड़ी है जो क़दम बोसी की ।
राह तकती है किसी की ये नज़र शाम के बाद ।।

फ़ुरक़ते इश्क़ में जल-जल के सराबों की तरह ।
सब्ज़ होता है उम्मीदों का शजर शाम के बाद ।।

लाख कौशिश में करूँ शेर कहाँ होते हैं ।
ताईरे फ़िक्र की थकती है नज़र शाम के बाद ।।
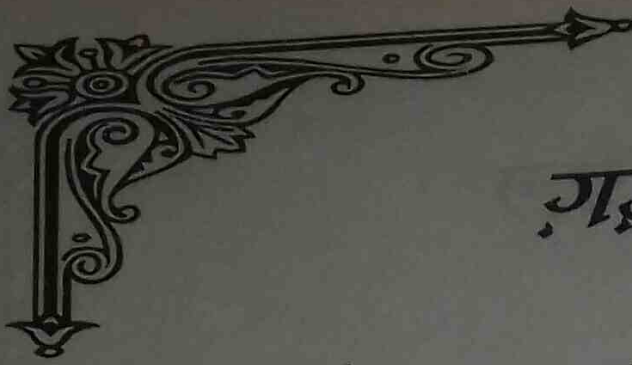
डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

मेरी आरज़ू है ये बाख़ुदा कभी फूल बनके खिला करो॥
मेरी ज़िन्दगी के चमन में तुम यूँ बहार बनके रहा करो॥

जो मिले हैं अश्के अलम मुझे हैं क़बूल मुझको वो दोस्तों।
ये मुक़द्दरों का ही खेल है जो गिला करो भी तो क्या करो॥

न कभी किसी को बुरा कहो है भलाई इसमें भला कहो।
कभी जन्म लेंगे न मसअले ज़रा अपनी हद में रहा करो॥

मेरी ज़िन्दगी की किताब में हैं ग़मों की कितनी इबारतें।
मेरी ज़िन्दगी की किताब तुम कभी भूल कर न पढ़ा करो॥

वो हिसारे-ग़म[1] से गुज़र गऐ जिन्हें मन्ज़िलों की तलाश थी।
ज़रा हौसले तो बढ़ाओ तुम ज़रा हौसलों से जीया करो॥

उड़ो जितना चाहो ख़लाओं[2] में उड़ो जितनी ऊँची उड़ान है।
कभी इस ज़मीं पे उतर के भी ज़रा दो क़दम तो चला करो॥

न तो आशना[3] ये ख़ुलूस से न वफ़ा से इनको है वास्ता।
ये अजीब लोग फ़राज़ हैं ज़रा फ़ासलों से मिला करो॥

1-आपदाओं का घेरा, 2-वायुमण्डल, 3-सम्बद्ध

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

तू मेरा दिल मेरी जान है ॥
तुझ पे सौ जान क़ुरबान है ॥

सामने मेरे बैठा है तू ।
मेरी आँखों में क़ुरआन है ॥

साथ तू है अगर ग़म नहीं ।
हर क़दम पे जो तूफ़ान है ॥

मुझ से आँखें मिला बात कर ।
इतना क्यों तू परेशान है ॥

चाँदनी शब में हम तुम मिलें ।
ये मेरे दिल का अरमान है ॥

डर मुझे रहबरों का है अब ।
हर कोई तो निगहबान है ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

चाँदनी छत पे जो आए तो ग़ज़ल होती है ॥
जब घटा ज़ुल्फ़ की छाए तो ग़ज़ल होती है ॥

जिसके अल्फ़ाज़ में ख़ुश्बू हो तबस्सुम लब पर ।
गर वो आवाज़ लगाए तो ग़ज़ल होती है ॥

संगे मर-मर से तराशी कोई सरतापा ग़ज़ल ।
जो नज़र सामने आए तो ग़ज़ल होती है ॥

मुस्कुराते हुए आँचल को हटाए सर से ।
फिर जो आँखें वो मिलाए तो ग़ज़ल होती है ॥

सर्द रातों में कोई प्यार के तोहफ़े दे कर ।
दिल में तूफ़ान जगाए तो ग़ज़ल होती है ॥

दिल के सुनसान अन्धेरों में उजालों की तरह ।
वो ख़यालों में जो आए तो ग़ज़ल होती है ॥

हो बहारों भरा ख़ुश्बू से महकता मौसम ।
गीत उस पर कोई गाए तो ग़ज़ल होती है ॥

नर्म नाज़ुक सा बदन फूल-सा खिलता चहरा ।
जो अगर ख़्वाब में आए तो ग़ज़ल होती है ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

नेक आदत में ढल गया कोई ॥
मेरी आदत बदल गया कोई ॥

मूंग छाती पे दल गया कोई ।
रंग गालों पे मल गया कोई ॥

दिल तो उनको भुलाये बैठा था ।
ख़्वाब आँखों में पल गया कोई ॥

उसने झुक कर मुझे सलाम किया ।
जाने क्यों मुझपे जल गया कोई ॥

ये तो क़िस्मत का खेल है यारों ।
कोई बैठा है चल गया कोई ॥

घर से निकला था मैं दुआ लेकर ।
हादसा सर से टल गया कोई ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
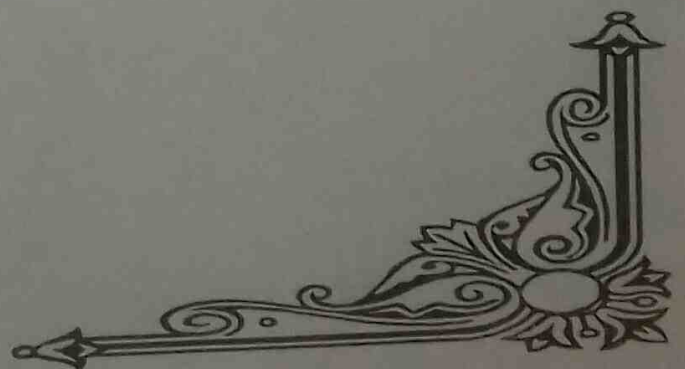
नफ़रतों को मिटा दीजिये ॥
सारे शिकवे भुला दीजिये ॥

चाहे जो भी सज़ा दीजिये ॥
पर ख़ता तो बता दीजिये ॥

कश्तियों को बढ़ा दीजिये ॥
लंगरों को उठा दीजिये ॥

ऐब जिसमें नहीं हो कोई ।
शख़्स ऐसा बता दीजिये ॥

आग घर में लगाते हों जो ।
ऐसे दीपक बुझा दीजिये ॥

प्यार की जिससे धारा बहे ।
ऐसे दरिया बहा दीजिये ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

ख़ाक कहानी आदिल[1] जाने ।।
सच्चाई तो क़ातिल जाने ।।

क़ाबिल को बस क़ाबिल जाने ।।
क़ाबिल को क्या जाहिल जाने ।।

धन वाले तो सब हैं लेकिन ।
कौन सख़ी[2] है साईल[3] जाने ।।

मज़्ज़ुबों[4] की आज़ादी को ।
कैसे कोई फ़ाज़िल[5] जाने ।।

बर्बादी की साजिश में वो ।
मुझको भी तो शामिल जाने ।।

गुमराही से कैसे बचाऐं ।
अपनो को कामिल[6] जाने ।।

कौन समन्दर पार लगेगा ।
ये बातें तो साहिल जाने ।।

1-इंसाफ करने वाला, 2-दानी, 3-भिखारी,
4-ईश्वर प्रेम में दीवाना, 5-बहुत पढ़ा लिखा,
6-पूर्णज्ञाता

डॉ. वाहिद फ़राज़
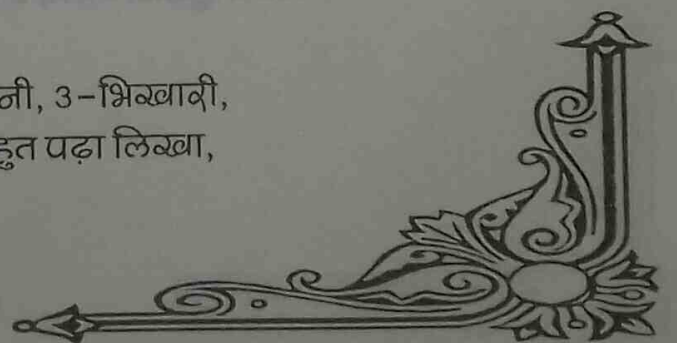
ग़ज़ल

शिकवे शिकायत कौन करे ।।
बदनाम मुहब्बत कौन करे ।।

तू ही मुजरिम तू ही मुन्सिफ़[1] ।
तुझ से अदावत कौन करे ।।

तेरे आगे उनकी बातें ।
ऐसी हिमाक़त[2] कौन करे ।।

अश्कों का तो ढेर लगा है ।
आज तिजारत कौन करे ।।

कुर्सी की है अफ़रा तफ़री ।
यार बग़ावत कौन करे ।।

1-फ़ैसला सुनाने वाला, 2-मूर्खता

डॉ. वाहिद फ़राज़
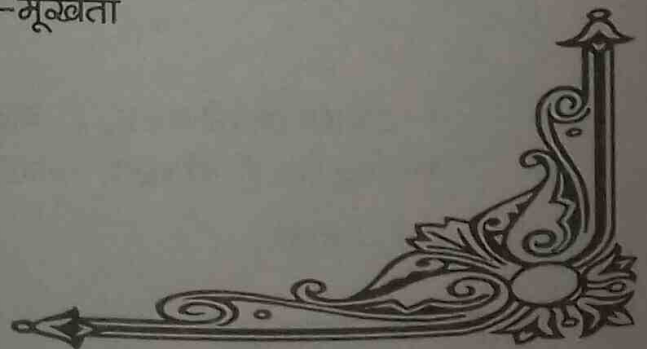
ग़ज़ल

ग़म के आँसू पी लेते हैं ।।
हँसते - हँसते जी लेते हैं ।।

इन्साँ हैं वो काँटों से जो ।
ज़ख़्म जिगर के सी लेते हैं ।।

अपना जीना मुश्क़िल क्या है ।
कैसे-कैसे जी लेते हैं ।।

अश्क ख़ुशी के बह जाते हैं ।
ग़म के आँसू पी लेते हैं ।।

तेरी ख़ुशी पर मर जाते हैं ।
तेरे ग़म में जी लेते हैं ।।

रखने को हम पासे-मुहब्बत[1] ।
तू जो दे दे पी लेते हैं ।।

हौसला हो तो जीने वाले ।
फुटपाथों पर जी लेते हैं ।।

1-प्रेम लाज

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

भले समय के साथी लोग ।।
जैसे हों बाराती लोग ।।

मौक़ा पा कर बढ़ लेते हैं ।
देख दुखों की पाती लोग ।।

इमानों को बेच रहे हैं ।
जैसे पाला भाजी लोग ।।

भैंस के आगे बीन बजाना ।
कुम्भकरण से आदी लोग ।।

देश का सौदा सस्ता करते ।
पहन के महंगी खादी लोग ।।

ताबूतों मे सौदे बाजी ।
कैसे-कैसे पापी लोग ।।

काम सभी के हो जाऐं पर ।
मार रहे हैं भाँची लोग ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़
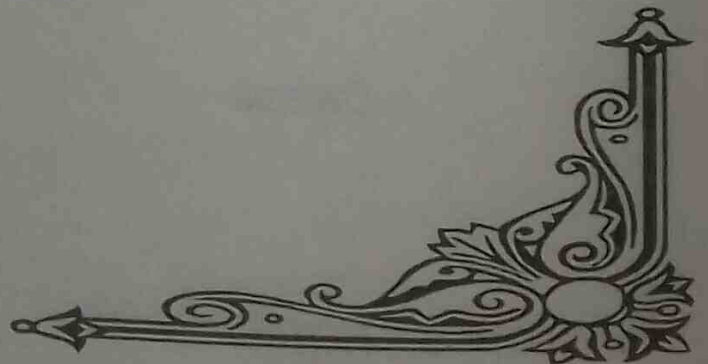
ग़ज़ल

उसने नैना मुझसे मिलाए आज ख़ुदाया ख़ैर करे ॥
बुरी नज़र से ख़ुदा बचाए आज ख़ुदाया ख़ैर करे ॥

ख़ुश्बू उसके अल्फ़ाज़ों में और तबस्सुम होंठों पर ।
प्यार के नग़में उसने गाए आज ख़ुदाया ख़ैर करे ॥

साल सतरवां लगा हुआ है तन पे कुर्ती मल-मल की ।
उमड़-उमड़ कर बादल आए आज ख़ुदाया ख़ैर करे ॥

वो हैं तन्हा हम भी अकेले रात चवदवीं आई है ।
ऐसे में वो छत पे बुलाए आज ख़ुदाया ख़ैर करे ॥

बादल जैसी मुझको खीचे गर्मी उसके सांसों की ।
मेरी जवानी पिघली जाए आज ख़ुदाया ख़ैर करे ॥

काले गैसू चाँदसा चहरा ज़ुल्फ़ बिखेरे गालों पर ।
चाँद पे जैसे बादल छाए आज ख़ुदाया ख़ैर करे ॥

हुस्न की मदिरा उसने बनाई और नज़र के पैमाने ।
भर-भर प्याले मुझको पिलाए आज ख़ुदाया ख़ैर करे ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
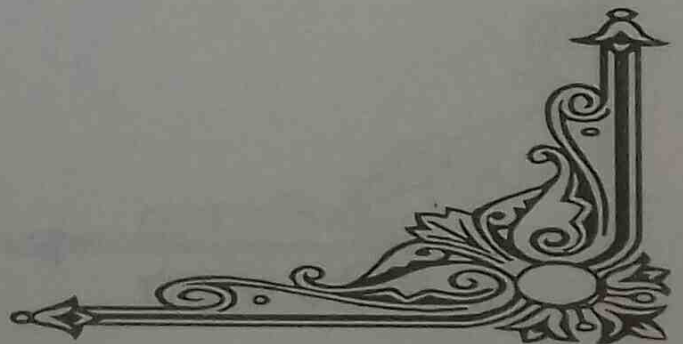
सुकूँ मिलता जो ज़हरे ग़म निगल जाता तो अच्छा था॥
यूँ हीं काँटे से काँटा गर निकल जाता तो अच्छा था॥

सितम सह कर भी आख़िर में तुझे मरना है घुट-घुट कर।
कफ़न बांधे हुए सर पर निकल जाता तो अच्छा था॥

लगा दी मुद्दतें तू ने फ़क़त[1] इक जां बचाने में।
लहू दे कर हवा का रूख़ बदल जाता तो अच्छा था॥

हुआ क्यों ख़ाक जल-जल कर तू उम्मीदे सहर ले कर।
मिसाले शम्अ पल भर में पिघल जाता तो अच्छा था॥

न मंज़िल से गिरा होता न मकसद[2] से हटा होता।
नसीहत सुन के माँ तेरी सम्भल जाता तो अच्छा था॥

नसीहत सबको दी तू ने वफ़ा की राह में लेकिन।
फ़राज़े ग़म ज़दा तू भी सम्भल जाता तो अच्छा था॥

1-केवल, 2-उद्देश्य

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

दुनिया में नहीं कोई भी ऐसा तो नहीं है ।
हाँ तुझ सा हसीं कोई भी देखा तो नहीं है ॥

वो मेरी जुदाई में तड़पता तो नहीं है ।
ये मैंने सबा से कभी पुछा तो नहीं है ॥

रहता है मेरे साथ जो हमज़ाद[1] की सूरत ।
ऐ दोस्त कहीं वो तेरा साया तो नहीं है ॥

क्यों झूठी तसल्ली मुझे देता है नजूमी[2] ।
हाथों में ख़ुशी की कोई रेखा तो नहीं है ॥

क्यों ऊँगली उठाता है ज़माना ये तुझी पर ।
दामन तेरे किरदार का मैला तो नहीं है ॥

शिकवा है फ़राज़ अपने मुकद्दर से हमें तो ।
औरों की तरफ़ कोई इशारा तो नहीं है ॥

1- प्रतिबिम्ब, 2-ज्योतिषी

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

बच्चों के हाथ में यूँ खिलोना न जा सका ॥
महंगा था इस क़दर कि ख़रीदा न जा सका ॥

शीशे बदल दिए जो मकां के तो क्या हुआ ।
नफ़रत का अक्स[1] दिल से मिटाया न जा सका ॥

सरमाया ज़िन्दगी का जो था घर बना लिया ।
दंगों में जल गया तो बसाया न जा सका ॥

नज़रों के सामने मेरी सब कुछ हुआ मगर ।
मज़लूम[2] का वो सब्र तो देखा न जा सका ॥

होंठों पे आज उनके तबस्सुम को देख कर ।
क़िस्सा ग़मों का हमसे सुनाया न जा सका ॥

ज़ालिम ने बारहा सभी कौशिश तो की मगर ।
राहे वफ़ा से हमको हटाया न जा सका ॥

1-तस्वीर, 2-जिस पर अत्याचार किया जा रहा हो,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

हासिल सुकूँ न होगा कभी आसमान पर ॥
जाना हो जिनको जाएं वो ऊँची उड़ान पर ॥

आती रही है धूप हमारे मकान पर।
दीवारो-दर पे आई कभी साएबान पर ॥

दिल में सुलग रही है तआसुब[1] की आग ओर।
हरफ़े वफ़ा भी रखते हैं अपनी ज़बान पर ॥

हमलावरों से ख़ुद को बचाने के वास्ते।
रखखेंगे तीर हम भी चढ़ा कर कमान पर ॥

ज़ुल्मों सितम की तेज़ हवाओं के साथ-साथ।
शौले बरस रहे थे हमारे मकान पर ॥

सच बोलना मुहाल[2] हमें हो गया फ़राज़।
ताले पढ़े हुए हैं हमारी ज़बान पर ॥

1-भेदभाव, 2-कठिन

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

वो मेरे पास भी आए थे गुलेतर[1] ले कर ॥
मैं भटकता ही रहा यास[2] के पत्थर ले कर ॥

जिसने घर अपना जलाया था उजालों के लिये ।
आज बैठा है अन्धेरों के समन्दर ले कर ॥

जो कि बिस्तर पे बिछाते थे गुलों की चादर ।
सौ गये क़ब्र में सीने पे वो पत्थर ले कर ॥

शेर गौई से हुआ बख़्त[3] किसी का रोशन ।
कोई बैठा रहा तारीक मुक़द्दर ले कर ॥

कल सबक़ जिसने मुहब्बत का दिया था हमको ।
आज राहों में खड़ा था वही पत्थर ले कर ॥

हाथ ख़ाली ही ज़माने के रहेंगे ए फ़राज़ ।
क्या गया देख लो दुनिया से सिकन्दर ले कर ॥

1-ताज़ा फूल, 2-उदासी, 3-भाग्य

डॉ. वाहिद फ़राज़
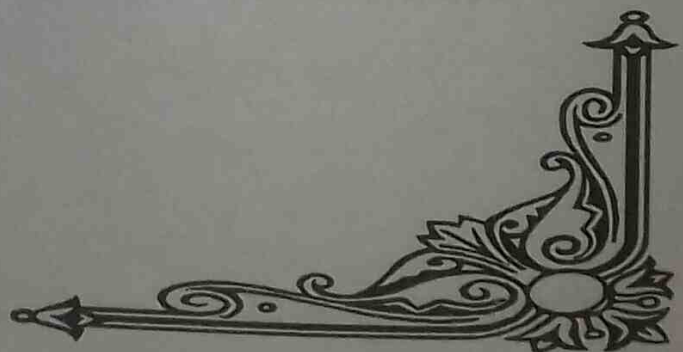
ग़ज़ल

रुख़ से आँचल जो उठाओ तो बहुत अच्छा है ।।
प्यार की प्यास बुझाओ तो बहुत अच्छा है ।।

पास ओर पास जो आओ तो बहुत अच्छा है ।।
फ़ासले और घटाओ तो बहुत अच्छा है ।।

दीप नफ़रत के बुझा कर के अन्धेरे दिल में ।
प्यार की शम्अ जलाओ तो बहुत अच्छा है ।।

चैन से जीने नहीं देगा ज़माना तुम को।
प्यार छुप-छुप के जताओ तो बहुत अच्छा है ।।

धन की लालच में बहू अपनी जलाने वालों ।
बेटियां अपनी जलाओ तो बहुत अच्छा है ।।

फिर नमक-पॉशी[1] का दस्तूर हुआ है राईज[2] ।
ज़ख़्म दिल के जो छुपाओ तो बहुत अच्छा है ।।

हम किसी प्यार के क़ाबिल तो नहीं हैं लेकिन ।
हौसले यूँ ही बढ़ाओ तो बहुत अच्छा है ।।

1-नमक छिड़कना, 2-प्रचलित

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

ख़्वाब कैसे दिखाई देते हैं ।।
बस अन्धेरे दिखाई देते हैं ।।

हम बताते हैं भूख का आलम ।
दिन में तारे दिखाई देते हैं ।।

जो मुक़द्दर के हैं धनी उनको ।
कब अन्धेरे दिखाई देते हैं ।।

उनकी तारीफ़ हम से मुश्किल है ।
आप जैसे दिखाई देते हैं ।।

गेसू गिरते हैं जब भी शानों पर ।
सांप जैसे दिखाई देते हैं ।।

वो किताबों को क्या पढ़ें जिनको ।
तौप गोले दिखाई देते हैं ।।

तन पे उजला लिबास है लेकिन।
क़ल्ब काले दिखाई देते हैं ।।

हैं सियासत से आज भी ग़ाफ़िल ।
लोग भोले दिखाई देते हैं ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
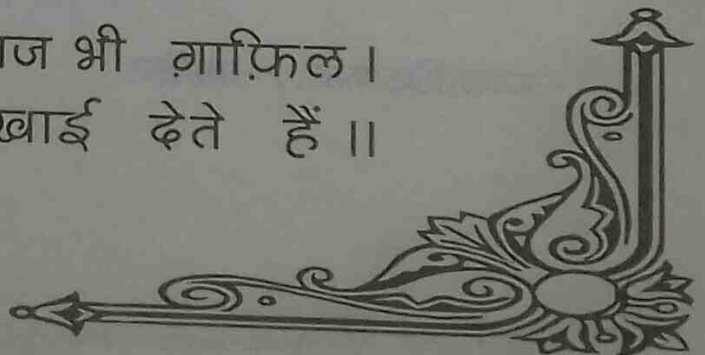
वफ़ा की राहों पे चलने वाले मिसाले नश्तर खटक रहे हैं ।।
सदाक़तों[1] के जो हैं पुजारी वही तो दर-दर भटक रहे हैं ।।

नई-नई सी इमारतें हैं अभी से छज्जे टपक रहे हैं ।।
तराशा जिनको नहीं गया था वही तो पत्थर खिसक रहे हैं ।।

कहीं पे आँखें टपक रहीं हैं कहीं पे ग़ुन्चें चटक रहे हैं ।।
कहीं पे अर्थी सजी हुई है कहीं पे घुंघरु खनक रहे हैं ।।

बुझे-बुझे से चराग़ घर के थकी-थकी सी दिलों की धड़कन ।
ग़मों की सर पे चढ़ा के चादर किसी के अरमां सिसक रहे हैं ।।

वतन में जो हैं उन्हीं के मस्कन[2] चमन-चमन में सजे हुए हैं ।
वतन से जो भी निकल गये हैं इधर उधर ही भटक रहे हैं ।।

दग़ा उसी से किया सभी ने लुटा के घर जो चला ख़ुशी से।
दिलासा मुझको दिया था जिसने उसी के आँसू टपक रहे हैं ।।

फ़राज़ ये तो फ़तह[3] नहीं है सुकूँ चमन में हुआ नहीं है ।
अभी भी आतीश[4] लगी हुई है अभी भी शौले भभक रहे हैं ।।

1-सच्चईयों के , 2-निवास स्थल /ढेरा, 3-विजय, 4-आग ,

डॉ. वाहिद फ़राज़
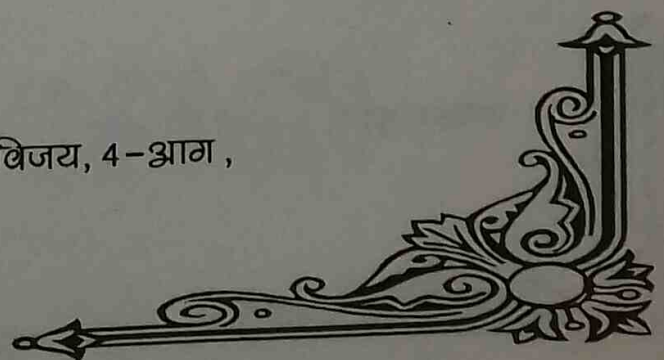
ग़ज़ल

है कहाँ वो मेरे जज़्बात समझने वाला ।।
मेरे पाकीज़ा ख़यालात समझने वाला ।।

वो नहीं है मेरी हक़ बात समझने वाला ।।
ये सिसकते हुए जज़्बात समझने वाला ।।

सबने फूलों को कलेजे से लगाया अपने।
कौन काँटों की ये सौग़ात समझने वाला ।।

बुग़ज़ो-कीनों[1] से भरा हो जो किसी का सीना ।
वो कहाँ प्यार के नग़मात समझने वाला ।।

उसको अदना सा इशारा ही बहुत है यारों ।
वो है आँखों के सवालात समझने वाला ।।

शिद्दते-ग़म[2] से बुझी जाती है शम्अ दिल की ।
क्या करेगा मेरे सदमात समझने वाला ।।

जिस तरफ़ देखिए ज़ालिम की हुकूमत है फ़राज़ ।
कोई मिलता नहीं हक़ बात समझने वाला ।।

1-नफरत-बुराई, 2-दुखों की अधिक्ता,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

थारो म्हारो ऐसो बन्धन ।।
थारी सांसा म्हारो जीवन ।।

रूठां-रूठां म्हारा साजन ।
रूखो सूखो जैसो सावन ।।

कान में म्हारा रसवा घोले ।
जब-जब बाजे थारा कंगन।।

थां जो आवे कैस बखेरे ।
महको जाए म्हारा आंगन ।।

जब-जब थांकी पायल बाजे ।
वेगी चाले जीव की धड़कन ।।

थारां दुख हो म्हारा नामे ।
म्हारी खुशियां थाके अरपन ।।

भूली बिसरी यादां थारी ।
धुंदलो-धुंदलो मन को दरपन ।।

थारो फ़राज़ अब कैसे जीवे ।
तोड़ दियो जो थां के बन्धन ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

गर जो कंगन को भी पायल ही कहा जाएगा ॥
ऐसे लोगों को तो पागल ही कहा जाएगा ॥

संगे मर-मर तेरी चितवन को कहा है किसने ।
फूल से तन को तो कोमल ही कहा जाएगा ॥

ज़ुल्फ़ सिमटेगी तो नागन ही लगेगी लेकिन ।
जब वो फैलेगी तो बादल ही कहा जाएगा ॥

ये हक़ीक़त है कि मैला तो हुआ है दामन ।
फिर भी आँचल को तो आँचल ही कहा जाएगा ॥

जिसमें सूखे हुए काँटों के सिवा कुछ भी नहीं ।
ऐसे गुलशन को जंगल ही कहा जाएगा ॥

वो जो कहते हैं उन्हें शौक़ से कहने दो फ़राज़ ॥
मुझको हर हाल में पागल ही कहा जाएगा ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

आँख से निन्दया उड़-उड़ जाए॥
रात सपन मे जब तू आए॥

तेरी कमरिया जब इठलाए।
रुप की गागर छलकी जाए॥

आँख से आँसू तेरे आए।
मेरा मनवा डूबा जाए॥

रात में जब-जब तेरा मुखड़ा।
चन्दा देखे शरमा जाए॥

तेरी भाषा बुलबुल बोले।
तेरे नग़में कोयल गाए॥

तेरे साजन आ ही रहे हैं।
कोई ख़बरिया ऐसी लाए॥

उस प्रेमी के भाग बड़े हैं।
जो जीवन में तुझको पाए॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

मीठा-मीठा बोल रहे हो ॥
कानों में रस घोल रहे हो ॥

पलकों पे जो प्यार सजा है ।
किसको इतना तोल रहे हो ॥

हाथों में यूँ ज़ुल्फ़ें ले कर ।
किस की क़िस्मत खोल रहे हो ॥

सारा आलम सोया-सोया ।
दरवाज़ा क्यों खोल रहे हो ॥

शायद दिल को चैन नहीं है ।
आंगन-आंगन डोल रहे हो ॥

सबने अपना मोल बताया ।
तुम हो जो अनमोल रहे हो ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

चहरे भोले भाले देखो ।।
धन्धे इनके काले देखो ।।

सांप वही हैं पाले देखो ।।
जो थे डसने वाले देखो ।।

देश में डाके डाले देखो ।।
कैसे हैं रखवाले देखो ।।

तेग़ें हैं न भाले देखो ।।
काम हैं फिर भी काले देखो ।।

अक़्लों पर हैं ताले देखो ।।
जज़्बातों पर जाले देखो ।।

इन्सानों को टाले देखो ।।
कुत्तों को ये पाले देखो ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
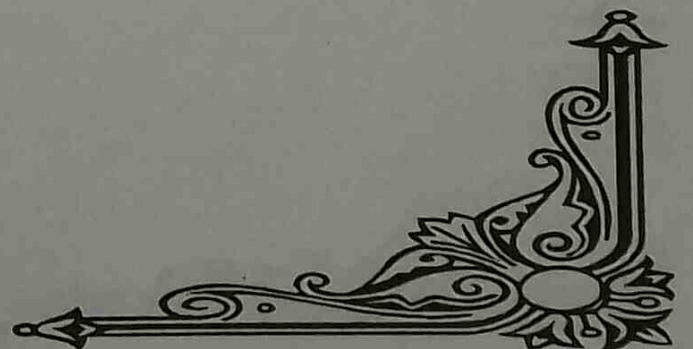
दूर डगर पर मंजिल है और तन्हा-तन्हा जाओगे ॥
राह कठिन है बांह पकड़ लो ठोकर कब तक खाओगे ॥

कब तक मुझ से दूर रहोगे कब तक यूँ तड़पाओगे ॥
मेरे दिल का चैन चुरा कर चैन कहाँ तुम पाओगे ॥

मैं न रहा तो याद करोगे मेरे नग़में गाओगे ॥
पल दो पल की बात नहीं है जीवन भर पछताओगे ॥

सौलह सावन रूप के बादल कब तक तुम बरसाओगे ॥
कब तक तुम से आस लगाएं कब तक यूँ तरसाओगे ॥

बाली उमर में दुल्हन बन के सजधज के जो जाओगे ॥
शीशे पर भी गाज गिरेगी शीशे में शरमाओगे ॥

डगर -डगर यूँ ढूँढ़ के मुझको कब तक धोखा खाओगे ॥
सारे नगर में ढूँढ़ लो मुझको अपने दिल में पाओगे ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

सिक्के हैं थोड़े पास में इनका क्या करूँ ॥
बच्चों को ख़ुश करूँ कि मैं माँ की दवा करूँ ॥

आटा नहीं है घर में तो मिर्ची भी ख़तम है ।
राशन मैं ले के जाऊँ कि कर्ज़ा अदा करूँ ॥

बच्चों का है तक़ाज़ा कि वर्दी सिलाऐंगे ।
उनकी किताबें लाऊँ कि फ़ीसें जमा करूँ ॥

बस्ते फटे हैं बच्चों के जूते भी हैं नहीं ।
वर्दी अगर जो लाऊँ तो छातों का क्या करूँ ॥

बारिश का ख़ौफ़[1] सर पे शकिस्ता[2] पड़ा है घर ।
दीवार गर बनाऊँ तो छप्पर का क्या करूँ ॥

कुर्ता फटा है अम्मी का अब्बू अलील[3] हैं ।
बच्चे भी माँगते हैं खिलोने मैं क्या करूँ ॥

1-डर, 2-क्षतिग्रस्त, 3-बीमार

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
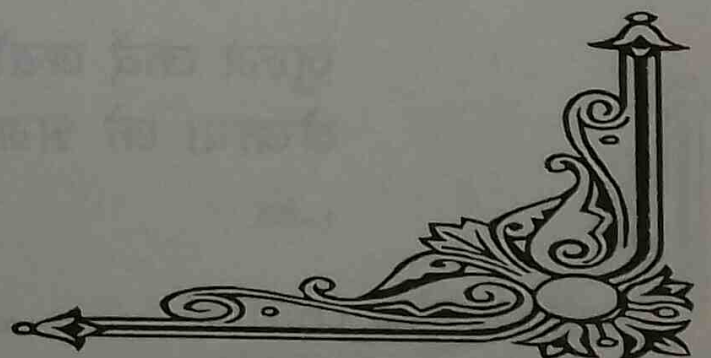
वैसे वो अन्जान नहीं है ।।
रिश्तों की पहचान नहीं है ।।

तुमने सबको जान लिया पर ।
पहचाना इन्सान नहीं है।।

महमाँ बन कर मेरे आओ ।
किसका ये अरमान नहीं है ।।

कश्ती वो ही पार लगेगी ।
जिसमें कि तूफ़ान नहीं है ।।

भीड़ भड़क्का ख़ूब है लेकिन ।
कोई भी इन्सान नहीं है ।।

ज़ब्त[1] नहीं है जिसमें यारों ।
वो कोई इन्सान नहीं है।।

कैसे इतना उड़ पाओगे ।
बाज़ू में तो जान नहीं है ।।

ज़ुल्म करें क्यों मजबूरों पर ।।
बेकस के भगवान नहीं है ।।

1-धैर्य,

डॉ. वाहिद फ़राज़
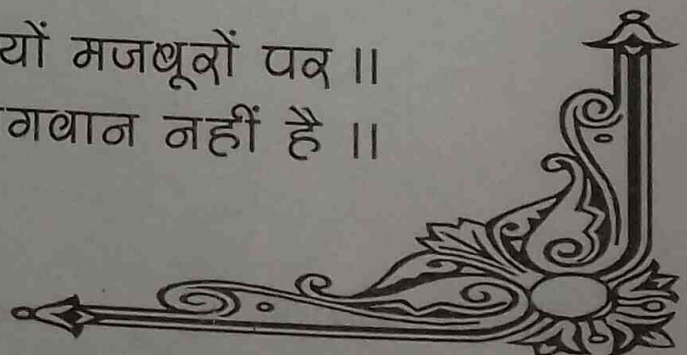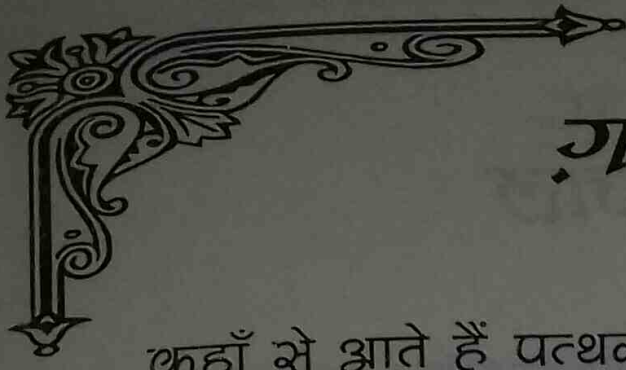
ग़ज़ल

कहाँ से आते हैं पत्थर तलाश करना है ।
लहू लुहान वो ख़ंजर तलाश करना है ॥

सुलग रहे थे जो नारों के दरमियां शब में ।
मुझे शहर में वही घर तलाश करना है ॥

शहर के सारे निशानात तो मिले लेकिन ।
अभी तो अपना मुझे घर तलाश करना है ॥

अमन की सब ने बनाई हैं कश्तियां घर में ।
मगर सभी को समन्दर तलाश करना है ॥

रूके तो पाँव के छालों ने कह दिया हमसे ।
चलो-चलो के मुक़द्दर तलाश करना है ॥

यज़ीदी नेज़े लिये चल रहे हैं करबल में ।
उन्हें हुसैनी अभी सर तलाश करना है ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़
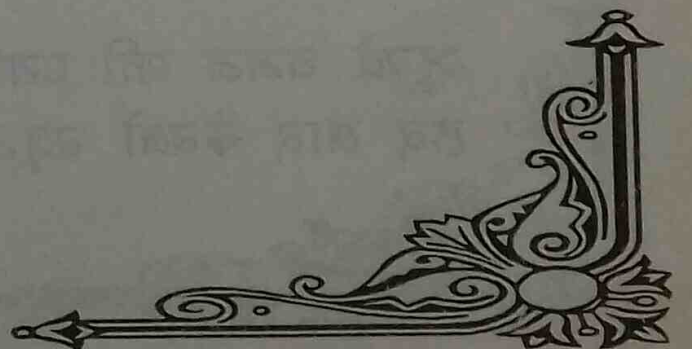
ग़ज़ल

जौरो-जफ़ा[1] व ज़ुल्म भी हँस कर सहा गया ॥
पैग़ाम ज़िन्दगी का जहाँ को दिया गया ॥

बैसाखियों का उनको सहारा दिया गया ॥
क़द को हमारे ऐसे भी छोटा किया गया ॥

वादा वफ़ाओ-प्यार का हम से किया गया ॥
दिल की जो बात आई तो उनको दिया गया ॥

ख़ुशबू सिमट के उनकी लिफ़ाफ़े में आ गई ।
जिन ऊँगलियों से बन्द लिफ़ाफ़ा किया गया ॥

सब कुछ कहा है हमको न अपना कहा कभी ।
सौ बार इम्तेहान हमारा लिया गया ॥

एहले वफ़ा का तज़किरा महफ़िल में जब हुआ ।
किस की ज़ुबाँ से नाम हमारा लिया गया ॥

होना थी जिनके हाथ में फूलों की डालियाँ ।
ख़न्जर उन्हीं के हाथ में देखो दिया गया ॥

सूखे चमन की प्यास बुझाने के वास्ते ।
हर बार देखो ख़ून हमारा लिया गया ॥

1-हठधर्मी,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

कुछ भरोसा नहीं मुक़द्दर का ।।
आईना बन गया है पत्थर का ।।

कितने पापी नहाए दरिया में ।
कुछ भी बिगड़ा नहीं समन्दर का ।।

उसने दम किस तरह से तोड़ा है ।
हाल देखा है हमने बिस्तर का ।।

ज़ख़्म हमको मिले हैं फूलों से ।
नाम रूस्वा हुआ है ख़न्जर का ।।

ख़ाक मैं हो गया हूँ जल-जल कर ।
कुछ भी बिगड़ा नहीं मुक़द्दर का ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

पाँव पीछे न हटाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।
हौसला अपना बढ़ाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।

मेरा माज़ी[1] न भुलाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।
मुझको यारों न सताओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।

कोई आँसू न बहाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।
मेरा मातम न मनाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।

अपने क़द को न बढ़ाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।
अपनी औक़ात में आओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।

सफ़े-हस्ती[2] से मेरा नाम मिटाने वालों ।
तुम किताबों को उठाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।

हो के मायूस न बैठो यूँ अन्धेरा कर के ।
लौ चराग़ों की बढ़ाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।

मेरे ऐबों को दिखाने की तमन्ना है अगर ।
दुश्मनों सामने आओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।

है बुरा वक़्त जो ख़ामोश हुए बैठा हूँ ।
ख़ौफ़ मेरा ज़रा खाओ मैं अभी ज़िन्दा हूँ ।।

1-भूतकाल 2- जीवन पृष्ठ

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
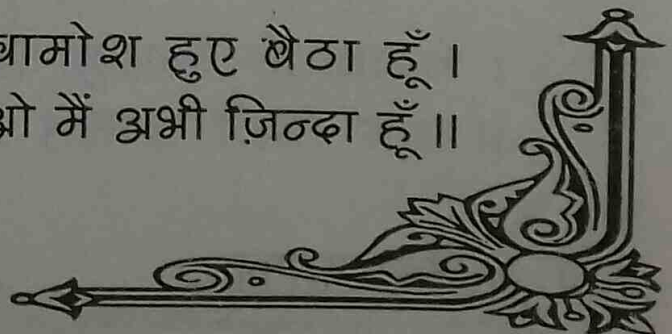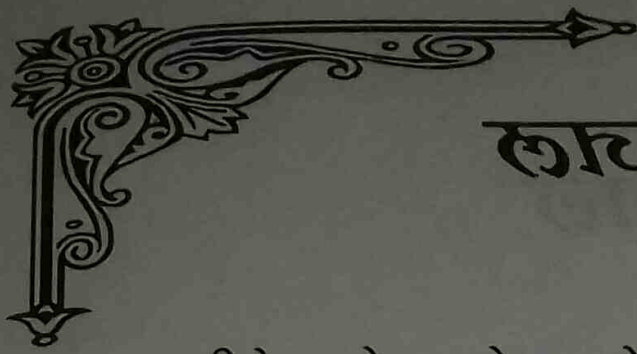
दरीचे खोल दो आने भी दो हवाओं को ।।
बुझा सकेंगी न ये अ़ज़्म के चराग़ों को ।।

सुकूत[1] अर्श का तोड़ा है मेरी आहों ने ।
उठे हैं हाथ मेरे जब कभी दुआओं को ।।

हज़ार बार चढ़ाया गया हूँ सूली पर ।
हज़ार बार नकारा है इन ख़ुदाओं को ।।

मुसीबतों में बढ़ाते हैं हौसला मेरा ।
चमकते देखता हूँ जब कभी सितारों को ।।

भँवर से बारहा तन्हा मैं भिड़ गया लेकिन ।
कभी भी मैंने न आवाज़ दी किनारों को ।।

मिले जो वक्त तो हाथों में लो पढ़ो उसको ।
सजा के रख्खों न ताक़ों में तुम किताबों को ।।

चमन में फिर से तअसुब[2] की आंधियाँ आई ।
जला के रख दिया दंगों ने फिर बहारों को ।।

1-सन्नाटा,2-भेदभाव

डॉ. वाहिद फ़राज़
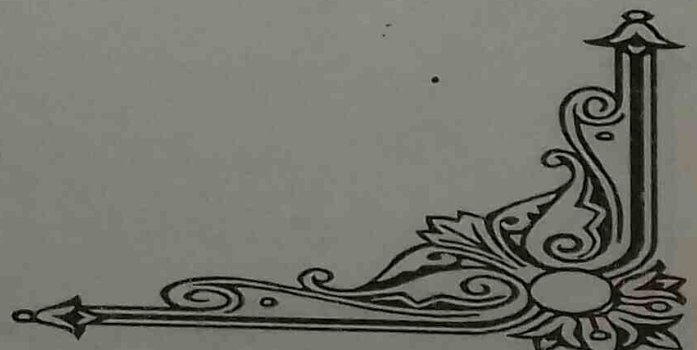
ग़ज़ल

फूल जूड़े में कोई उसने लगाया होगा ।।
खुदको शीशे में कई बार सजाया होगा ।।

कर के वादा कोई रातों में न आया होगा ।।
उसने घर अपना अन्धेरों से सजाया होगा ।।

रात मिलने को न उससे कोई आया होगा ।।
उसका दरवाज़ा हवाओं ने हिलाया होगा ।।

दीप उम्मीद का रह रह के जलाया होगा ।।
उसने दरवाज़ा जो रातों में लगाया होगा ।।

इन हवाओं ने दुपट्टे को उड़ाया होगा ।।
उनको खारों ने बहारों ने सताया होगा ।।

अपनी पलकों से तो काँटों को हटाया होगा ।।
मेरी राहों में जो दिल उसने बिछाया होगा ।।

कान जब भी मेरी आहट पे लगाया होगा ।।
फिर हवाओं ने उसे और सताया होगा ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
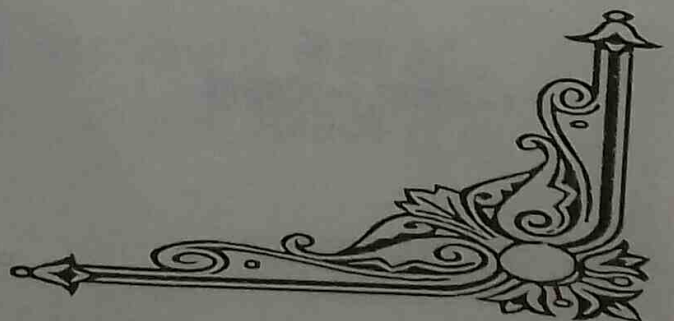
हम भी भरपूर सियासत का हुनर रखते हैं ।
फूल होंठों पे तो दांतों में ज़हर रखते हैं ॥

तोप तलवार से ताक़त से डराने वालों ।
हाथ ख़ाली हैं तो क्या जानो जिगर रखते हैं ॥

यदेबेज़ा लिये आते हैं तो आने दो उन्हें ।
हम भी दुश्मन के इरादों की ख़बर रखते हैं ॥

जब भी चाहेंगे दिखा देंगे ज़माने तुझको ।
ताड़ने वाले क़यामत की नज़र रखते हैं ॥

अपनी नाकामी पे मायूस न होते हैं फ़राज़ ।
दिल के आंगन में उमीदों का शजर रखते हैं ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
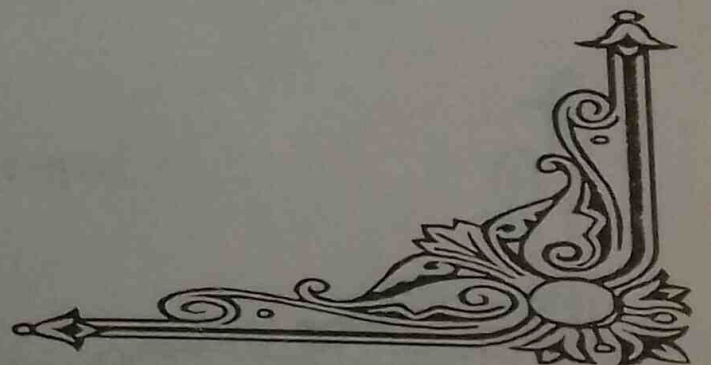
मेरे घर में आग लगी है सारे नगर में पानी है ॥
एक अकेले मुझको सताना मौसम की मनमानी है ॥

लाख करो तुम कोशिश लेकिन काम नहीं इक आनी है ॥
अमन चमन में होगा कहाँ से जब तक खिंचातानी है ॥

कुछ की ऑखें नम हैं देखो कुछ की ऑख में पानी है ॥
रूखा सूखा बचपन है और रोती गाती जवानी है ॥

कहीं पे सूखा कहीं पे बाढ़ें क़ुदरत ने क्या ठानी है ॥
दरिया सागर सूखे हैं और ऑखों-ऑखों पानी है ॥

जिसके घर को लूट लिया है तोप उसी पर तानी है ॥
ज़ुल्मो-सितम की हद है यारों सर से उपर पानी है ॥

दुश्मन को है सबक़ सिखाना हम ने मन में ठानी है ॥
जीत हमारी होगी यारों फिर क्यों आना कानी है ॥
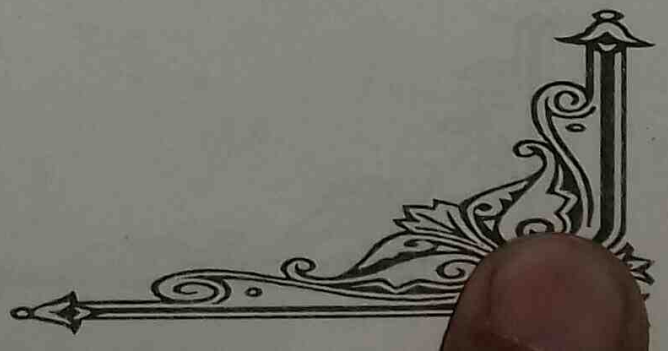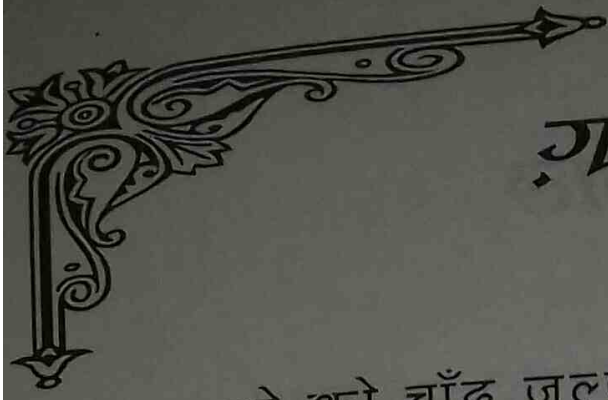
डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

चहरे को चाँद ज़ुल्फ़ को बादल बताएगा ॥
खुश्बू को तेरी हर कोई संदल बताएगा ॥

मौती बताएगा कभी शबनम कहेगा वो ॥
आँसू को तेरे हर कोई निर्मल बताएगा ॥

आँखों से आप मेरी हक़ीक़त न पूछिये ।
अन्धा भी छू के आपको कोमल बताएगा ॥

एहले-ख़िरद[1] को यारों न हरगिज़ गुमान था ।
दानिशवरों[2] को रास्ता पागल बताएगा ॥

पानी की बूँद गिन के गिराएगा देखना ।
किसको है प्यास कितनी ये बादल बताएगा ॥

हक़ पर चलेगा जो भी बदी[3] से रहेगा दूर ।
उसको ज़माना देखना पागल बताएगा ॥

रोका है उसको राह में किस किस ने ए फ़राज़ ।
गर वो बता न पाया तो आँचल बताएगा ॥

1-समझ रखनेवाला, 2-अक़लमंद, 3-बुराई,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

हमेशा रंगीं ख़याल रखना ॥
कभी न रंजो-मलाल[1] रखना ॥
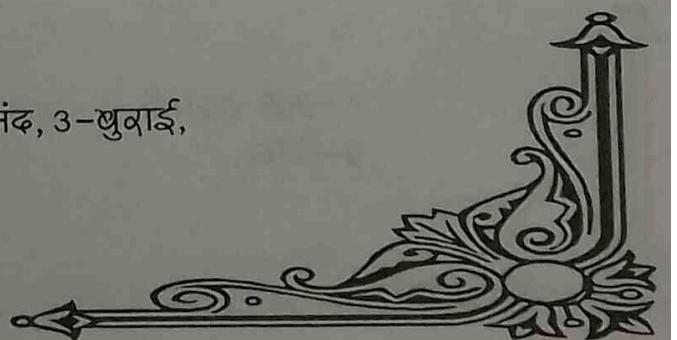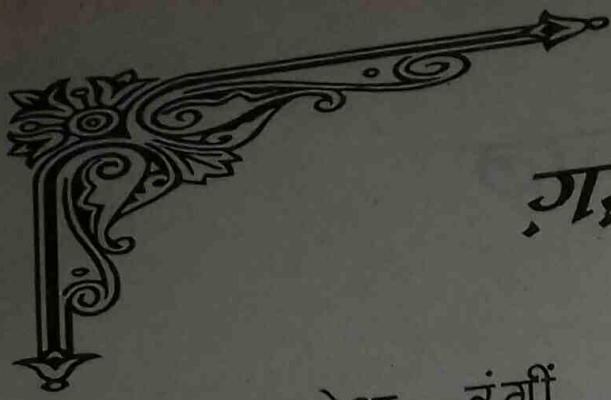
तरक्क़ियों का ये दौर[2] है पर।
वफ़ा का दामन सम्भाल रखना ॥

ग़में जहाँ को समेट लेना।
जहाँ में खुशियाँ उछाल रखना ॥

अदब[3] में ज़िन्दा रहो हमेशा।
बना के खुद को मिसाल रखना।

सदाएं तुमको ज़माना देगा ।
ख़याल ऐसे न पाल रखना ॥

भरम न कोई यहाँ रखेगा ।
यहाँ न कोई सवाल रखना ।

भटक न जाए फ़राज़ या रब।
बलन्दियों[4] में ज़वाल[5] रखना ॥

1-ग़म उदासी, 2-समय, 3-साहित्य, 4-ऊँचाई,
5-उतार,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
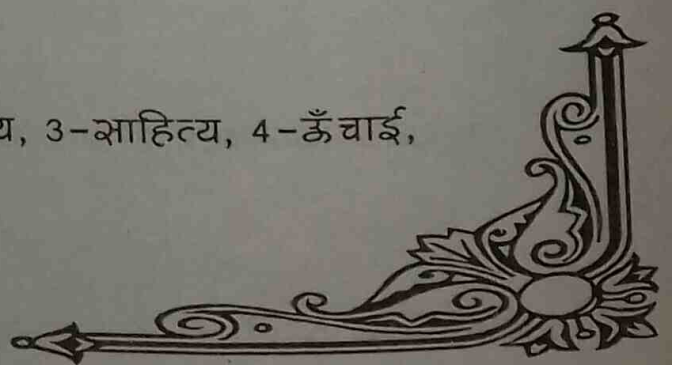
तुम्हें मैं दिल में बसाऊँगा मेरा वादा है ।।
बुरी नज़र से बचाऊँगा मेरा वादा है ।।

अन्धेरे दिल के मिटाऊँगा मेरा वादा है ।।
खुशी के दीप जलाऊँगा मेरा वादा है ।।

सुना के अपनी मुहब्बत की दास्तां सबको ।
किसी का दिल न दुखाऊँगा मेरा वादा है ।।

लगा के तेरी ये मूरत मैं अपने ही घर को ।
हसीन ताज बनाऊँगा मेरा वादा है ।।

तेरे हसीन तसव्वुर तेरे ख़यालों से ।
मैं अपने दिल को सजाऊँगा मेरा वादा है ।।

बुझा सकेंगी न आँधियां जिनको ।
चराग़ ऐसे जलाऊँगा मेरा वादा है ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

दाग़ दिल के अयां[1] नहीं होते ।।
अश्क गर ये रवां[2] नहीं होते ।।

मंज़िलें दूर दूर होती हैं ।
हौसले जब जवां नहीं होते ।।

ज़ुल्म ढाते हैं जो ग़रीबों पर ।
उनके नामो-निशां नहीं होते ।।

वो शजर ही तो टूटते हैं जो ।
आँधियों में कबां नहीं होते ।।

एहले-दानिश तो ये समझते हैं ।
आईने बेज़ुबां नहीं होते ।।

आड़ लेते हैं जो मुक़द्दर की ।
लोग वो कामरां नहीं होते ।।

जो बनाते हैं ऊँचे महलों को ।
उनके अपने मकां नहीं होते ।।

कोई रिश्ता ज़रूर है उनसे ।
अश्क यूँ ही रवां नहीं होते ।।

1-प्रकट, 2-निकलना/बहना,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

दाग़ दिल के अयां[1] नहीं होते ॥
अश्क गर ये रवां[2] नहीं होते ॥

मंज़िलें दूर दूर होती हैं ।
हौसले जब जवां नहीं होते ॥

ज़ुल्म ढाते हैं जो ग़रीबों पर ।
उनके नामो-निशां नहीं होते ॥

वो शजर ही तो टूटते हैं जो ।
आँधियों में कमां नहीं होते ॥

एहले-दानिश तो ये समझते हैं ।
आईने बेज़ुबां नहीं होते ॥

आड़ लेते हैं जो मुक़द्दर की ।
लोग वो कामरां नहीं होते ॥

जो बनाते हैं ऊँचे महलों को ।
उनके अपने मकां नहीं होते ॥

कोई रिश्ता ज़रूर है उनसे ।
अश्क यूँ ही रवां नहीं होते ॥

1-प्रकट, 2-निकलना/बहना,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

ज़ख़्म हर रोज़ मेरे दिल को नया देते हैं ।।
तल्ख़[1] जुमलों से मेरे दिल को दुखा देते हैं ।।

जिनको देना है ज़हर उनको दवा देते हैं ।।
कैसे नादान हैं क़ातिल को दुआ देते हैं ।।

अपनी कोशिश है कि आतीश को बुझाया जाए ।
एहले-दानिश हैं जो शोलों को हवा देते हैं ।।

पीठ पीछे वो बुराई में लगे रहते हैं ।
सामने जब कभी आते हैं दुआ देते हैं ।।

मुझसे उल्फ़त भी निभाते हैं ज़माने में मगर ।
वक्त आता है तो सूली पे चढ़ा देते हैं ।।

सब्ज़-गुल्शन में मेरे आग लगा कर ए फ़राज़ ।
मेरे एहबाब[2] वफ़ाओं का सिला देते हैं ।।

1-कड़वा, 2-रिश्तेदार,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

मैंने एक फूल की आँखों में नमी देखी है ॥
रक्स[1] करते हुए काँटों पे ख़ुशी देखी है ॥

भूख क्या शय है ये एहसास बुरा है यारों ।
मैंने रोटी को बिलखती वो घड़ी देखी है ॥

जो समझते ही नहीं थे कि तअसुब[2] क्या है ।
बस्तियां मैंने उन्हीं की तो जली देखी है ॥

काम आता है जो दुनिया में मसीहा बन कर ।
उसके दामन में ही ख़ुशियों की कमी देखी है ॥

घर में टीवी को सजा कर के तो रक्खा है मगर ।
धूल क़ुरआन के पारों पे जमी देखी है॥

मैं तअसुब के समन्दर का गवाह हूँ मैंने ।
अपने मासूम से बच्चों की बलि देखी है ॥

जिस जगह हो के गुज़रती है तबाही की तरफ़ ।
ज़िन्दगी आज वहीं फिर से खड़ी देखी है ॥

मुझसे मिलता है वो होंठों पे तबस्सुम लेकर ।
मैं ने दुश्मन में भी आदत ये भली देखी है ॥

1-नृत्य, 2-भेदभाव,

डॉ. वाहिद फ़राज़
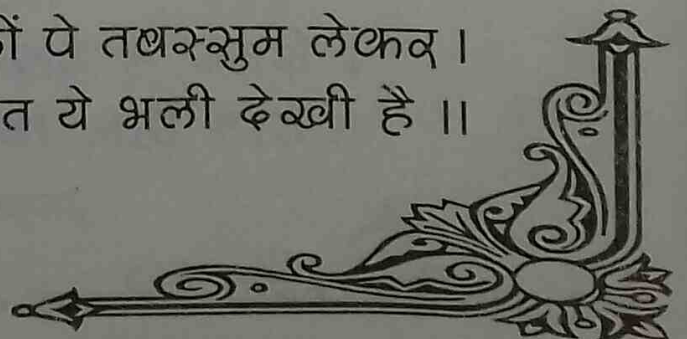
ग़ज़ल

मिलने जुलने का सिलसिला रखना ।।
गर जो लाज़िम हो फ़ासला रखना ।।

अपने हाथों को तुम उठा रखना ।।
अपने होंठों पे बस दुआ रखना ।।

रिन्द फिर लौट कर के आएंगे ।
मैक़दे को अभी खुला रखना ।।

तन से तन का मिलन तो मुश्किल है ।
मन से मन को मगर मिला रखना ।।

मंज़िलें ख़ुद तुम्हें तलाशेंगी ।
चलते रहने का हौसला रखना ।।

ख़ुद को शीशे में देख पाओ तो ।
अपने होंठों पे फिर गिला रखना ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
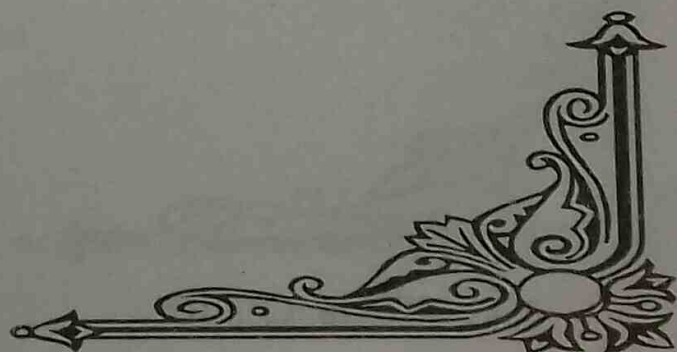
अज़्मो-हिम्मत है जान बाक़ी है ।।
आसमां की उड़ान बाक़ी है ।।

ज़ुल्म कहने को मिट गया होगा ।
क़ातिलों[3] की दुकान बाक़ी है ।।

खाली तरकश तो हो गऐ कब सके ।
सिर्फ घर में कमान बाक़ी है ।।

होटलें खुल गयीं हैं महलों में ।
बस्तियों में मकान बाक़ी है ।।

मन्दिरों में भी शंख बजते हैं ।
मस्जिदों में अज़ान बाक़ी है ।।

ख़ौफ़ खाते नहीं मेरे बच्चे।
मेरी नसलों में आन बाक़ी है ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

जो उसूलों के दास होते हैं ।।
हर क़दम पर वो पास होते हैं ।।

मेरी आँखों के चन्द-क़तरे ही ।
इक समन्दर की प्यास होते हैं ।।

जो हँसाते हैं सारी दुनिया को ।
अपने घर में उदास होते हैं ।।

मेरा ईमान डग-मगाता है ।
जब भी बच्चे उदास होते हैं ।।

आबलों[1] की जिन्हें नहीं परवाह ।
वो ही मंज़िल सनास[2] होते हैं ।।

तेरी यादों में जो गुज़रते हैं ।
वो ही लम्हें तो ख़ास होते हैं ।।

आँधियों से बचे हुए तिनके ।
आशियाने की आस होते हैं ।।

1-पाँव के छाले, 2-मंजिल पाने वाले,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

आजा बैठें पल दो पल ।।
किसको होगी फ़ुर्सत कल ।।

तू जो कहे तो मानलूं ये भी ।
छू ले आकर गंगा जल ।।

नेकी तेरी डूब न जाए ।
पेशानी पर इतने बल ।।

तेरे ज़माने बीत चुके हैं ।
नई सदी है फिर से ढल ।।

जल-जल कर ही मरना है तो ।
शमअ जैसा बनकर जल ।।

काम बहुत हैं आज ही कर ले ।
किसने देखा होगा कल ।।

बच्चे तेरी राह तकेंगे ।
सांझ हुई है घर को चल ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़
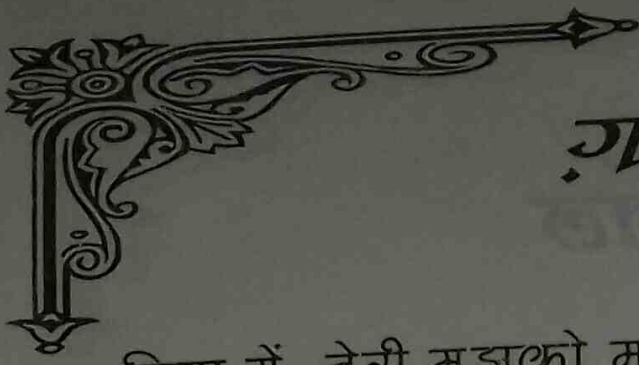
ग़ज़ल

दुनिया में तेरी मुझको मुहब्बत नहीं मिली ।।
चहरे हसीन मिल गये चाहत नहीं मिली ।।

यूँ तो हसीन लाख थे मेरी तलाश में ।
दिल में बसी थी जो मेरे सूरत नहीं मिली ।।

डाले हुए थे जिस्म पे ज़र्री-लिबास[1] जो ।
फ़ितरत में उनके थोड़ी शराफ़त नहीं मिली ।।

उनसे जुदा मैं हो के परेशान था मगर ।
मुझ से बिछड़ के उनको भी राहत नहीं मिली ।।

हँस-हँस के कर रहे थे ज़माने से बात वो ।
मुझसे नज़र मिलाने की फ़ुरसत नहीं मिली ।।

करता हूँ नाज़ अपने मुक़द्दर पे पर फ़राज़ ।
दरकार[2] मुझ को थी वही मुरत नहीं मिली ।।

1-रेशमी धागे से कढ़ाई किया गया धारित वस्त्र, 2-आवश्यकता

डॉ. वाहिद फ़राज़
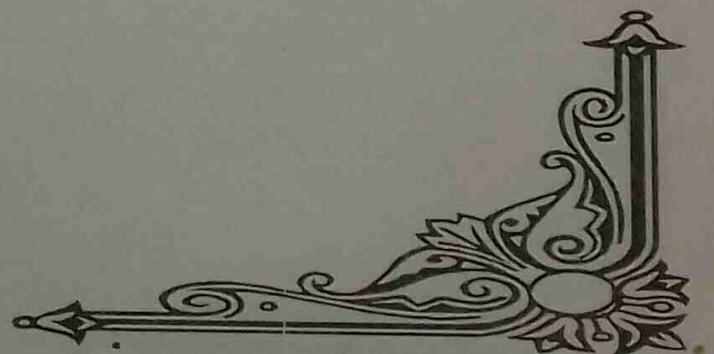
ग़ज़ल

इस पुराने घर में उनका आना जाना है नहीं ॥
उनकी क़िस्मत में मुहब्बत का ख़ज़ाना है नहीं ॥

जिनकी मीठी बोलियों से ये चमन आबाद था ।
उन परिन्दों का दरख़्तों पर ठिकाना है नहीं ॥

क्यों वो मिलने बेतकल्लुफ़ आज आएंगे भला ।
अब वो अख़लाक़ो [1] मुहब्बत का ज़माना है नहीं ॥

बीबी बच्चों में सिमट कर रह गया है आदमी ।
भाई बहनों की जगह हो वो घराना है नहीं ॥

हाथ में थामें हैं गुल और दिल ज़हर से है भरा ।
गाँव भी शहरों की तरह अब पुराना है नहीं ॥

सुन के बरबादे चमन की दास्तां अब ए फ़राज़ ।
जो लबों पर अम्न का था वो फ़साना है नहीं ॥

1-मधुर व्यवहार

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
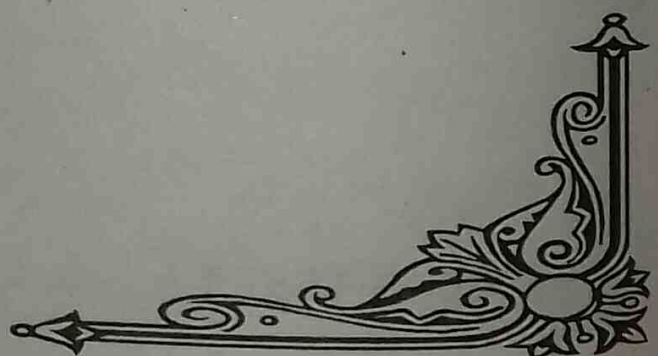
हाले-दिल सबको बताऊँ तो बताऊँ कैसे ।।
आप पूछे जो अगर मुझसे छुपाऊँ कैसे ।।

ग़म के घनघोर अन्धेरों में उलझ बैठा हूँ ।
शम्ऐं उम्मीद जलाऊँ तो जलाऊँ कैसे ।।

दिल की नफ़रत तो ज़बानों से निकल आई है ।
ज़ख़्म दिल के मैं मेरे यार दिखाऊँ कैसे ।।

ख़ून महदूद[1] हो हाथों में तो धो लूँ मैं मगर ।
दाग़ दामन में लगे हों तो छुपाऊँ कैसे ।।

आग कश्ती की बुझाना तो है मुमकिन ए फ़राज़ ।
आग दरिया में लगी हो तो बुझाऊँ कैसे ।।

1-सीमित,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
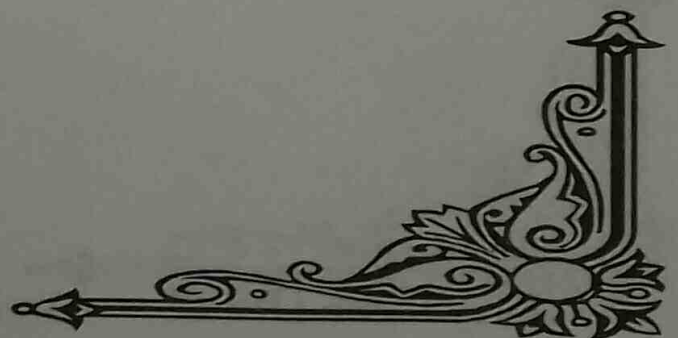
शानों[1] पे मेरी ग़ैर का सर कैसा लगेगा ।।
लग जाए तुम्हें इसकी ख़बर कैसा लगेगा ।।

महफ़िल में किसी और को मैं देख रहा हूँ ।
आ जाए अगर तुमको नज़र कैसा लगेगा ।।

जिस वक्त चली जाओगी उठ कर मेरे घर से ।
मैं सौच रहा हूँ मेरा घर कैसा लगेगा ।।

तुमने भी नगर मेरी तरह छोड़ दिया तो ।
कैसी ये गली होगी नगर कैसा लगेगा ।।

आती है अगर दूर से ज़ुल्फ़ों की महक यूँ ।
इस पार है ऐसा तो उधर कैसा लगेगा ।।

पूछो न कोई बात मेरे दिल से फ़राज़ अब ।
वो हों जो अगर साथ सफ़र कैसा लगेगा ।।

1-कंधों,

डॉ. वाहिद फ़राज़
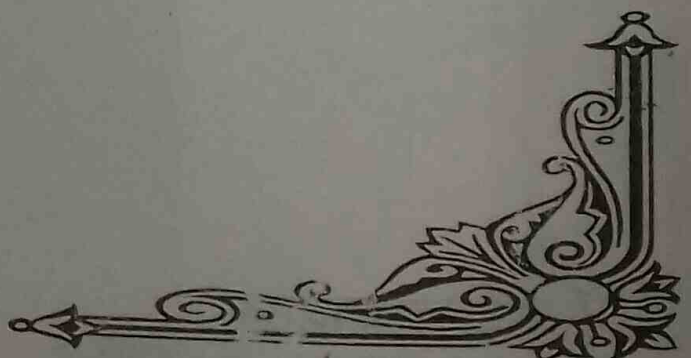
ग़ज़ल

मेरे मेहबूब की मुझ पर जो नज़र हो जाए।
ज़िन्दगी चैन से मेरी भी बसर हो जाए॥

सबके होंठों से तबस्सुम की शुआएं[1] निकले।
उनके आने की जो महफिल में ख़बर हो जाए॥

हँसते हँसते वो मिला लें जो निगाहें मुझसे।
हसरतों का मेरी शादाब शजर हो जाए॥

रूख़ पे आँचल जो गिराएं तो अन्धेरे छाएं।
रूख़ से आँचल जो उठाएं तो सहर हो जाए॥

आशियां[2] दिल में वो अपना जो बना लें आकर।
फिर तो जन्नत से भी प्यारा ये नगर हो जाए॥

वो ग़ज़ल पढ़ के मुलाक़ात को आएं घर पर।
मेरे अश्आर[3] में इतना तो असर हो जाए॥

1-किरणें, 2-निवास, 3-ग़ज़ल के शेरों का बहुवचन,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

घर से ऊँचा सर मौला ।।
ऊँचा कर दे घर मौला ।।

सूखा सावन मेरा घर है ।
बस्ती बस्ती तर मौला ।।

सबके दुखः तो दूर किये ।
मेरे दुखः भी हर मौला ।।

मंगता ख़ाली जा! न पाए ।
इतना दे दे ज़र मौला ।।

छोटा कर दे मुझ को या ।
चादर चोड़ी कर मौला ।।

दूर गगन में उड़ जाऊँ मैं ।
मुझको दे दे पर मौला ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
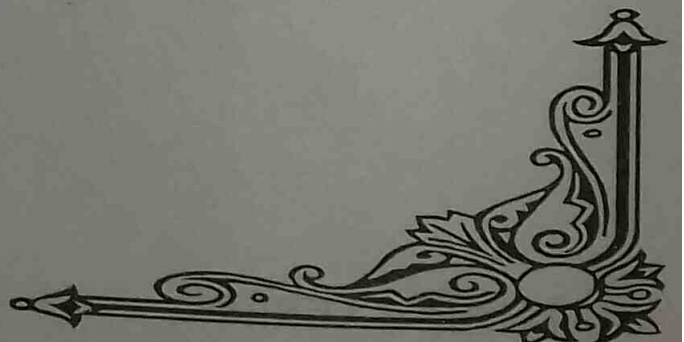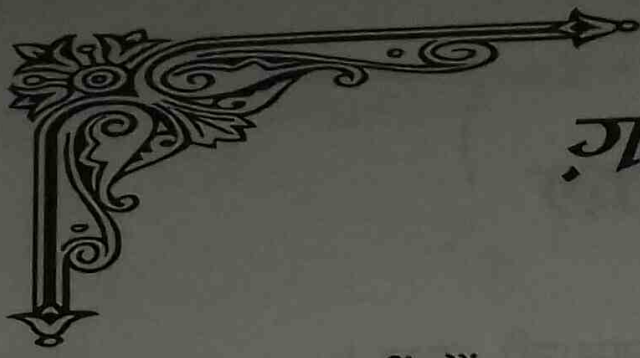
पैसे नहीं हैं पास में कैसे ग़ज़ल लिखूँ ।।
टूटी है मेरी आस में कैसे ग़ज़ल लिखूँ ।।

बहरों[1] का है ख़याल न मिलते हैं क़ाफ़िये[2] ।
कुछ भी नहीं है पास में कैसे ग़ज़ल लिखूँ ।।

बेटी जवान है मेरी दहलीज़ पर खड़ी ।
जर-जर हुआ लिबास में कैसे ग़ज़ल लिखूँ ।।

मिट्टी के एक कच्चे खिलोने के वास्ते ।
बच्चे हुए उदास में कैसे ग़ज़ल लिखूँ ।।

रहता हूँ रात दिन मैं समन्दर के पास पर ।
बुझती नहीं है प्यास में कैसे ग़ज़ल लिखूँ ।।

चहरे को तक रहा है अभी मेरे ए फ़राज़ ।
खाली पड़ा गिलास में कैसे ग़ज़ल लिखूँ ।।

1-ग़ज़ल लिखने का आधार, 2-तुकबंदी,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
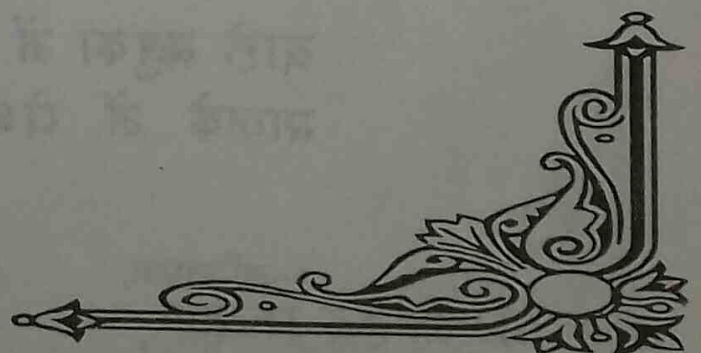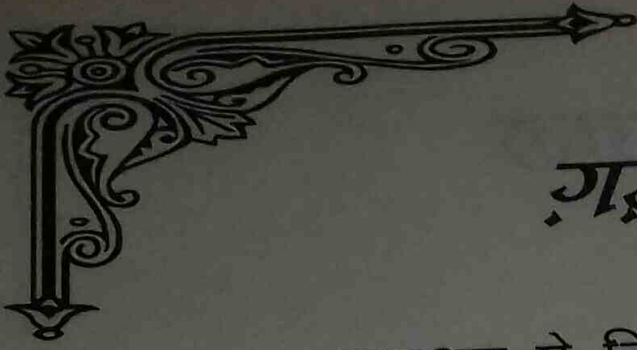
गुलशन पे निगरानी रख ।।
नज़रों को दरबानी रख ।।

तेरा हुस्न जवानी रख ।
ये है आनी जानी रख ।।

याद करेगी दुनिया तुझको ।
अपनी भी क़ुरबानी रख ।।

मंगता ख़ाली कैसे जाए ।
दिल को अपने दानी रख ।।

रहने दे ये क़िस्से झूठे ।
सच्ची एक कहानी रख ।।

बच्चे चाहे कुछ भी कह लें ।
अपनी सोच सयानी रख ।।

सर पर चादर मत रख लेकिन ।
आँखों में तो पानी रख ।।

राहे ख़ुदा में मिटना है तो ।
सजदे में पेशानी[1] रख ।।

1-मस्तिष्क,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
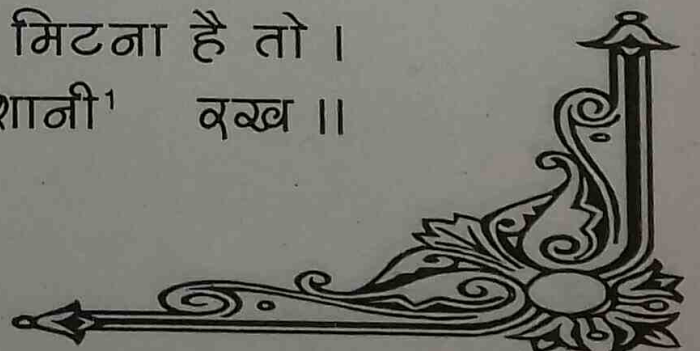
फिर अन्धेरे से डर गया सूरज ।।
काम कैसा ये कर गया सूरज ।।

हादसा कल जो होने वाला है ।
आज लेने ख़बर गया सूरज ।।

ले के पानी तो आ गए बादल ।
ये बताओ किधर गया सूरज ।।

कर के मज़दूरी माँ नहीं लौटी ।
कितनी जल्दी उतर गया सूरज ।।

चाँद कहता है अपने तारों से ।
अब तो आओ के घर गया सूरज ।।

हाल क्या होगा गर नहीं आया ।
रूठ कर जो अगर गया सूरज ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़
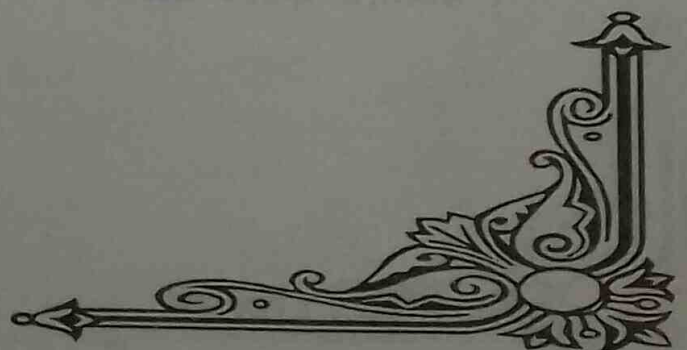
ग़ज़ल

कौन अपना है जो मुड़-मुड़ के सदा देता है ।।
ये वो मंज़िल है कि साया भी दग़ा देता है ।।

कोई क़ातिल है जो जीने की दुआ देता है ।।
और मोहसिन[1] है जो सूली पे चढ़ा देता है ।।

शब[2] में आने का कभी उससे किया था वादा ।
वो सरेशाम चराग़ों को बुझा देता है ।।

ज़ख़्म देता है वो करता है मसीहाई[3] भी ।
दर्द के साथ ही वो मुझको दवा देता है ।।

बात दीवाने की महफ़िल में अगर छिड़ती है ।
हर कोई मेरी तरफ़ ऊँगली उठा देता है ।।

अश्क बनते हैं स्याही मैं ग़ज़ल लिखता हूँ ।
जब कोई ज़ख़्म मेरे दिल के दुखा देता है ।।

1-दोस्त, 2-रात, 3-ईलाज,

डॉ. वाहिद फ़राज़
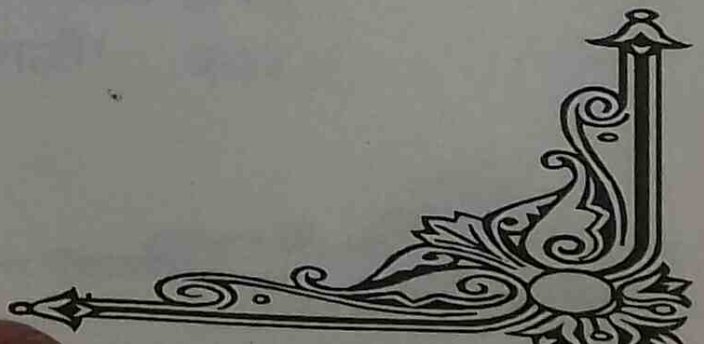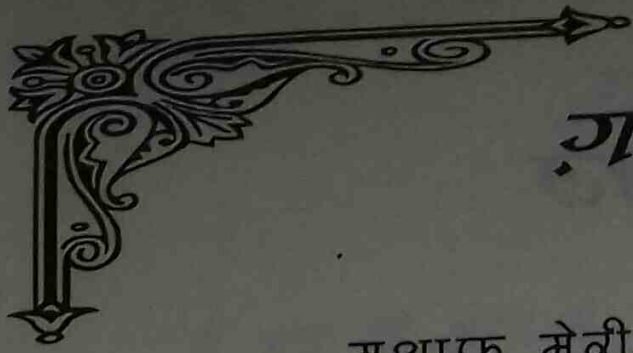
ग़ज़ल

मुआफ़ मेरी ख़ताएं करना ॥
जो हो सके तो वफ़ाएं करना ॥

ख़ुदा ने चाहा तो फिर मिलेंगे ।
हमेशा ऐसी दुआएं करना ॥

मिलें अचानक जो मोड़ पे तो ।
मेरी भी जानिब निगाहें करना ॥

मिला के नज़रें न फेर लेना ।
कभी न ऐसी जफ़ाएं करना ॥

मरीज़े-इश्क़ो[1] वफ़ा हूँ मैं भी ।
मेरे भी दिल की दवाऐं करना ॥

इधर भी आतीश लगी है दिल में ।
इसे भी ठंडी हवाएं करना ॥

1-प्रेम रोगी,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

रूख़े-ज़ेबा[1] दिखा साक़ी[2] ।।
ज़रा गैसू[3] हटा साक़ी ।।
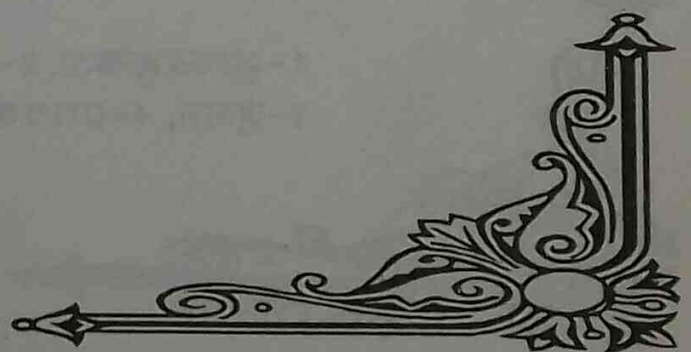
बना कर मए मुहब्बत की ।
तेरे हाथों पिला साक़ी ।।

जो होश आया तो कर दूँगा ।
तेरे हक़ में दुआ साक़ी ।।

बड़ी मुद्दत में आई है ।
तेरे घर से हवा साक़ी ।।

मयस्सर जो भी हो दे दे ।
नहीं कोई गिला साक़ी ।।

ज़माने भर में ढूँढ आया ।
नहीं तुझसा मिला साक़ी ।।

कहाँ भटकूँ गा महशर[4] में ।
मुझे दे दे पता साक़ी ।।

1-सुन्दर मुखड़ा, 2-शराब पिलाने वाली,
3-ज़ुल्फ़, 4-प्रलय का दिन

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

ये क्या पी गया मैं ख़ुदा पीते- पीते ।।
नशा आ गया है दवा पीते-पीते ।।

बुलाया गया जब भी महशर में मुझको ।
ख़ुदा के भी आगे गया पीते-पीते ।।

मैं पीता नहीं था तो कुछ भी नहीं था ।
वली बन गया था-ख़ुदा पीते-पीते ।।

जो सूरत में साक़ी की वाईज़[1] को देखा ।
मुझे आ गई है हया पीते-पीते ।।

अन्धेरे थे ज़ुल्मत के चारों तरफ़ ।
मिला मुझको घर का पता पीते-पीते ।।

वो मक़बूल हो कर के रहती है यारों ।
निकलती है जो भी दुआ पीते-पीते ।।

गले उसको फिर मैं ख़ूशी से लगा लूँ ।
चली आए गर जो क़ज़ा[2] पीते-पीते ।।

1-उपदेशक, 2-मौत,

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
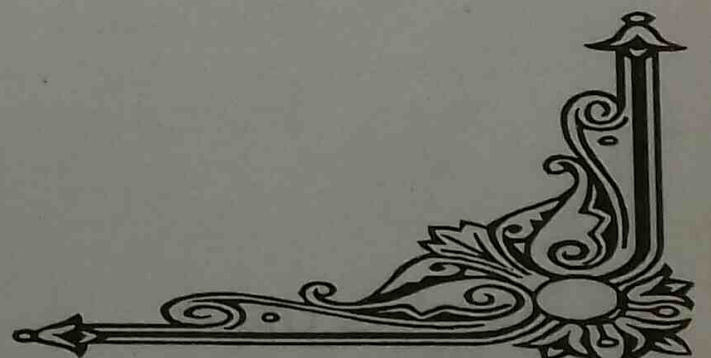
ज़ुबाने हक़[1] यहाँ पर खोलता क्यों है ।।
पड़े हैं ज़ुल्म के ताले तोड़ता क्यों है ।।

अमीरे-शहर[2] की भी यही इक ज़िद है ।
उठा कर सर यहाँ पर बोलता क्यों है ।।

तू घबराता है क्यों ज़ुल्मो-तशद्दुद से ।
उसूले ज़िन्दगानी तोड़ता क्यों है ।।

लगा कर चल गले दुश्मन को हिम्मत है ।
बुज़ूर्गों के चलन को छोड़ता क्यों है ।।

नए रिश्ते बनाना हो गये मुश्किल ।
मरासिम[3] ये पुराने तोड़ता क्यों है ।।

वो ज़ालिम है अगर सूली चढ़ाएगा ।
हक़ीक़त से तू मुँह को मोड़ता क्यों है ।।

1-सच, 2-गाँव का मुखिया, 3-रिश्ते,

डॉ. वाहिद फ़राज़
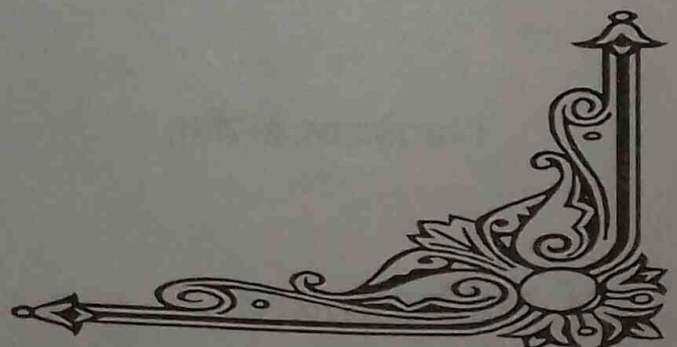
ग़ज़ल

इस गली कूचे में यारों आता जाता कौन है ।।
संग[1] राहों से हटा कर दिल बिछाता कौन है ।।

दूर आँखों में ये मेरी जग-मगता कौन है ।।
नूरो निकहत के ये धारे फिर बहाता कौन है ।।

सख़्त तारीकी में मुझको रास्ता दिखता रहा ।
मेरी राहों में ये अकसर दिल जलाता कौन है ।।

वो तवज्जो[2] मुझ में शायद रख रहा है आज कल ।
वरना ग़ज़लों को मेरी यूँ गुन-गुनाता कौन है ।।

फिर ज़रुरत उसको मेरी आज शायद है फ़राज़ ।
बे वजह यूँ देखलो फिर मुस्कुराता कौन है ।।

हो न हो ये उसका साया लग रहा है ए फ़राज़ ।
आज रिश्ते इस तरह के यूं निभाता कौन है ।।

1-पत्थर, 2-ध्यान ,

डॉ. वाहिद फ़राज़
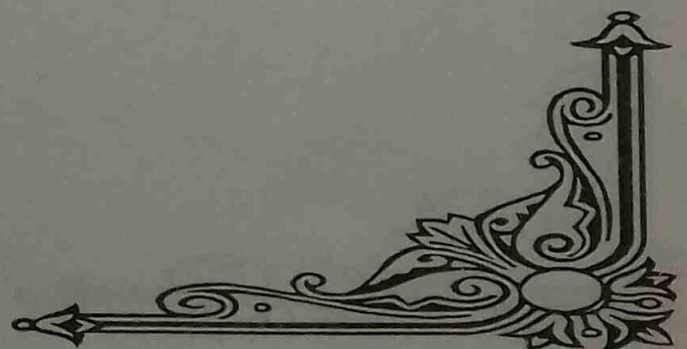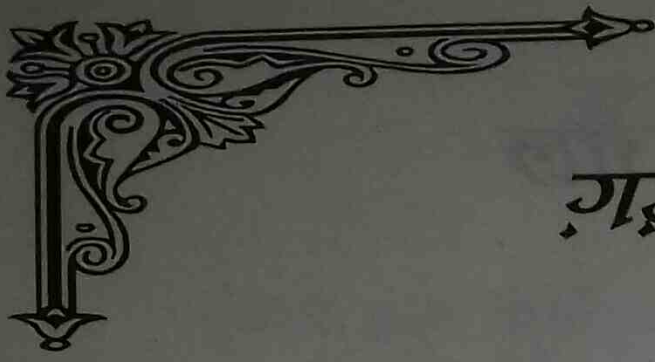
ग़ज़ल

दूर दुनिया से अन्धेरा होगा ।।
रात जाएगी सवेरा होगा ।।

लाख दुनिया में अन्धेरा होगा ।।
ख़्वाब उसका तो सुनहरा होगा ।।

मैं अन्धेरे की वज़ाहत[1] कर दूँ ।
उसने ज़ुल्फ़ों को बिखेरा होगा ।।

तू शहनशाह मैं गदा[2] हूँ लेकिन ।
वक्त तेरा है न मेरा होगा ।।

ज़हमतें कितनी उठाई होंगी ।
उसके वादे पे जो ठहरा होगा ।।

1-स्पष्ट, 2-मंगता/भिखारी,

डॉ. वाहिद फ़राज़
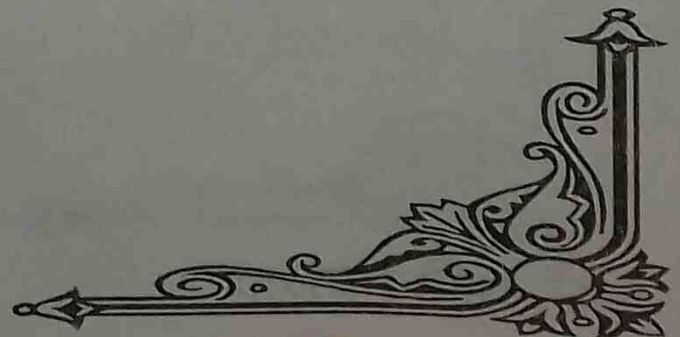
ग़ज़ल

ज़माने से न कोई आरज़ू रखना ।।
बचा कर हो सके तो आबरू रखना ।।

वफ़ाओं का सिला वो जब कभी चाहें ।
लगा कर आईना तू रूबरू रखना ।।

वो नादां ही सही पर अम्न की ख़ातिर ।
बना कर उनसे मीठी गुफ़्तगू रखना ।।

मिलें दुनिया में तुझको सबके सब दानिश ।
कभी भी तू न ऐसी जुस्तजू रखना ।।

भरोसा सब पे हो लेकिन ज़रूरी है ।
निगाहें एहतियातन चारसू[1] रखना ।।

1-चौतरफ़,

डॉ. वाहिद फ़राज़
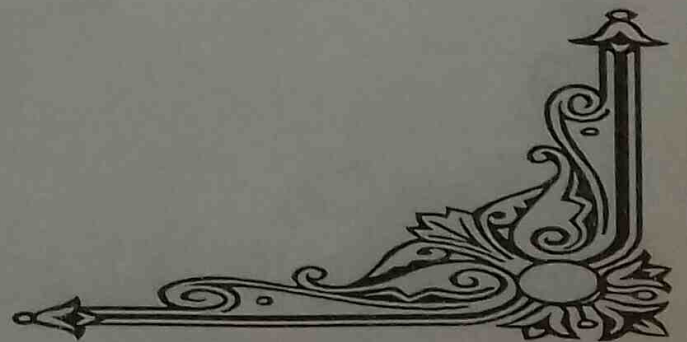
ग़ज़ल

अपना घर तो घर होता है ।।
घर के बाहर डर होता है ।।

चादर से जो पाँव ढकूँ तो ।
बाहर मेरा सर होता है ।।

इन्सां यारो वो ही है जो ।
क़ुरबाँ औरों पर होता है ।।

बूढ़ी माँ का हाल न पूछो ।
बच्चा बाहर गर होता है ।।

किलकारी से गूंज उठे जो ।
जन्नत जैसा घर होता है ।।

ज़ालिमों की तलवारों पर ।
मज़लूमों का सर होता है ।।

वो भी दिल का राज़ बता दें ।
दीवारों का डर होता है ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़
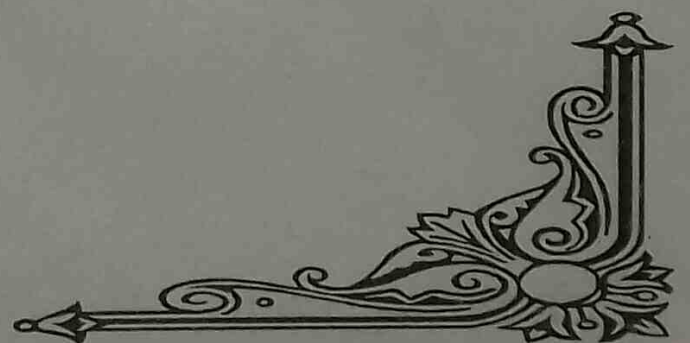
ग़ज़ल

दुनिया में अपनी धाक जमाने के वास्ते ।।
निकलें हैं घर से ख़ून बहाने के वास्ते ।।

मिसमार[1] कर के रख दी ग़रीबों की बस्तियां ।
होटल सितारा छाप बनाने के वास्ते ।।

आवारा बन गये जो पढ़ाई न कर सके ।
स्कूल खोल बैठे कमाने के वास्ते ।।

तहज़ीब[2] फूल वाली वो इन्सां ने छोड़ दी ।
केक्ट्स रखें हैं घर को सजाने के वास्ते ।।

करते दुआएं रोज़ थे मरने की जो मेरे ।
तुरबत पे आए फूल चढ़ाने के वास्ते ।।

जब भी दुखेगा सर तो दबाएगी लड़कियाँ ।
लड़के तो बस हैं सर को दुखाने के वास्ते ।।

उम्मीद मैंने जिनसे लगाई थी वो फ़राज़ ।
आए हैं आग घर में लगाने के वास्ते ।।

1-ध्वस्थ, 2-संस्कृति,

डॉ. वाहिद फ़राज़
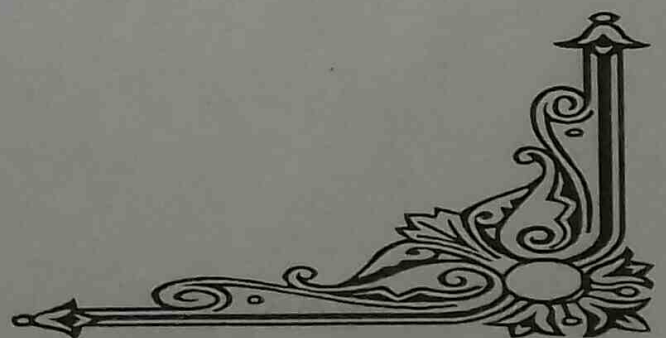
ग़ज़ल

बिन पिये लड़-खड़ाने लगे ।।
होश फिर आने जाने लगे ।।

पर्दे जब वो गिराने लगे ।।
खिड़कियों पर निशानें लगे ।।

फिर ग़लत फ़हमियाँ बढ़ गई ।
फिर वो नज़रें चुराने लगे ।।

जिनको देखा नहीं था उन्हें ।
भुलने में ज़माने लगे ।।

आँसुओं ने मना कर दिया ।
जब वो काजल लगाने लगे ।।

बारिशें लो क़रीब आ गई ।
घर परिन्दें बनाने लगे ।।

ऊँगलियाँ रक्स करने लगीं ।
दिल ग़ज़ल गुन-गुनाने लगे ।।

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल
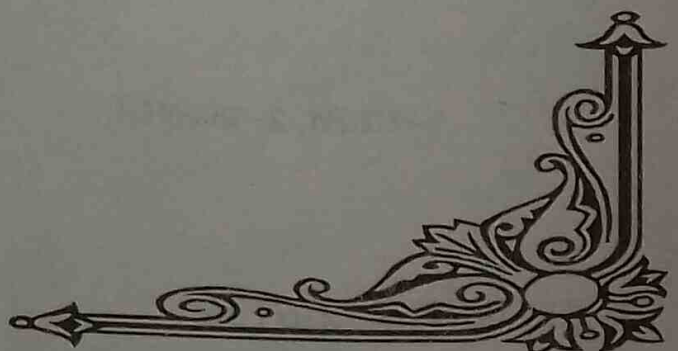
हमने अख़लाको मुहब्बत की कहानी दी है ॥
हुस्न गर उसने दिया हमने जवानी दी है ॥

रात आएगी तो रोएगी लहू के आँसू ।
उसको ख़्वाबों की हसीं ऐसी निशानी दी है ॥

वो हसीं लाख हैं माना है हक़ीकत लेकिन ।
हुस्ने ज़ेबा को भी हमने ही रवानी दी है ॥

है मेरे प्यार का एहसान अगर माने तो ।
रात उसको दी हसीं सुबह सुहानी दी है ॥

याद माज़ी की उसे फिर से रुलाएगी फ़राज़ ।
हमने लिख्खी हुई चिट्ठी वो पुरानी दी है ॥

डॉ. वाहिद फ़राज़

ग़ज़ल

वो ही ख़ुशियां ज़माने की पाता रहा ॥
नाज़ माँ-बाप के जो उठता रहा ॥

ठोकरें वो ज़माने की खाता रहा ।
जो भी माँ बाप का दिल दुखाता रहा ॥

ज़िन्दगी भर वही मुस्कुराता रहा ॥
बारे-ग़म जो ख़ुशी से उठाता रहा ॥

वो घनी धूप में छाँव पाता रहा ।
जो शजर अपने घर में लगाता रहा ॥

अपने किरदार को आईना कर गया ।
जो गले दुश्मनों को लगाता रहा ॥

उसको चहरा न अपना दिखाई दिया ।
आईना जो सभी को दिखाता रहा ॥

ज़ुल्मते-शब[1] में तन्हा मुझे देख कर ।
इक सितारा बहुत झिलमिलाता रहा ॥

वो ज़माने में मर कर भी ज़िन्दा रहा ।
काम दुनिया में जो सबके आता रहा ॥

1-चरित्र, 1-ग़मों की रात,

डॉ. वाहिद फ़राज़